वेदों की ओर लौटो।

॥ ओ३म् ॥
॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक
पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष २३ अंक २- मार्च,अप्रैल २०२३

युगस्रष्टा! हे युग परिवर्तक! आर्यपुत्र!
हे वेदपथिक! भारतसुत! हे दशरथनन्दन!
श्रीराम तुम्हारा शताभिनन्दन..!

आर्य समाज के १४८ वें स्थापना दिवस पर दिल्ली में आयोजित विशेष समारोह में यज्ञ करते केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मन्त्री मा.श्री अमितजी शाह।

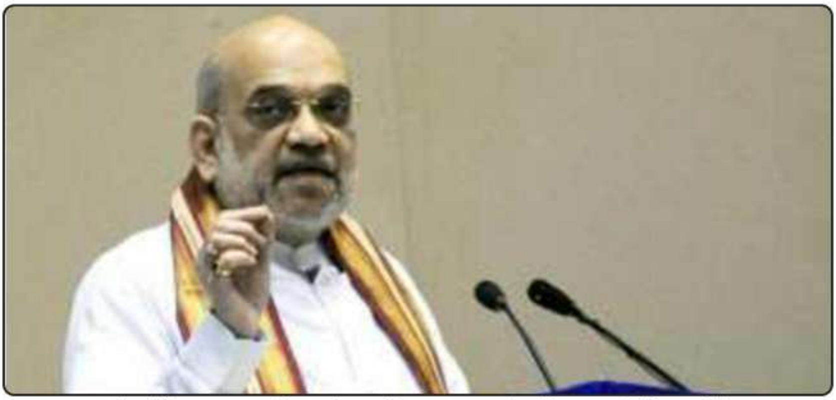

समारोह में प्रभावशाली सम्बोधन देकर गृहमन्त्री श्री शाहजी ने आर्यों का उत्साह बढाया।

मा.गृहमन्त्रीजी को चतुर्वेद भेट करते हुए श्री प्रकाशजी आर्य, स्वामी प्रणवानन्दजी, राज्यपाल श्री गंगाप्रसादजी आर्य, गुजरात के राज्यपाल डॉ.श्री आचार्य देवव्रतजी।

औराद भूमिपुत्रों का गौरव समारोह- दि.२६ फरवरी २०२३

गाँव में निकाली गयी तपस्वी गौरवमूर्तियों की उत्साहवर्धक शोभायात्रा का परिदृश्य

डॉ.ब्रह्ममुनिजी का सम्मानपत्र प्रदान कर गौरव करते हुए श्री गुणवन्तरावजी पाटील।

समारोह के मुख्यातिथि श्री जयसिंगरावजी गायकवाड पाटील का सम्मान करते हुए सर्वश्री डॉ.रामचन्द्रजी शास्त्री, रघुरामजी गायकवाड, गुणवन्तरावजी व राजेंद्रजी पाटील।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,१२४ कलि संवत् ५१२४ विक्रम संवत् २०८०

दयानन्दाब्द १९९ चैत्र/वैशाख १० अप्रैल २०२३

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
राजेन्द्र दिवे	**डॉ.ब्रह्ममुनि**	**डॉ.नयनकुमार आचार्य**
(९८२२३६५२७२)		(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर, ज्ञानकुमार आर्य, राजवीर शास्त्री, डॉ.अरुण चव्हाण**

लेख/समाचार भेजने हेतु – ई–मेल : nayankumaracharya222@gmail.com

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ०४
२) म.दयानन्द की मानवता! (सम्पादकीयम्)............ ०५
३) वाल्मीकि के श्रीराम!............ ०७
४) क्या हनुमान बन्दर थे ? १०
५) कें.गृहमन्त्री अमित शाहजी का सम्बोधन १४
६) समाचार दर्पण १७
७) शोकसमाचार २१

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी २५
२) राम म्हणता रामची होईजे! २६
३) औराद- पंचरत्न भूमिपुत्रांचा गौरव समारंभ......... ३१
४) वार्ताविशेष ३४
५) शोकवार्ता ३८

✲ प्रकाशक ✲
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, सम्पर्क कार्यालय–आर्य समाज, परली–वैजनाथ–४३१५१५

✲ मुद्रक ✲
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली–वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रू.१००/-
आजीवन रू.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवादकी परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली–वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगन्ध

अध्यापिका एवं उपदेशिका स्त्रियां

नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठै ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।७।।

(ऋग्वेद ७/४१)

पदार्थान्वय– जो पढाने ओर उपदेश करने वाली (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी के समान (**अभिष्टुते**) सामने पढाती वा उपदेश करती, वे (**वसिष्ठैः**) अतीव धनाढ्यों के साथ जैसे (**मित्रः**) मित्र के समान प्यारे आचरण करनेवाला (**वरुणः**) जल के समान शान्ति देनेवाला और (**अग्निः**) अग्नि के समान प्रकाशित यश जन तथा (**चन्द्राः**) आनन्द देनेवाले (**नः**) हमारे लिये (**उपमम्**) उपमा जिसको दी जाती है, उसको अतीव सिद्ध करानेवाले (**अर्कम्**) सत्कार करनेयोग्य धन-धान्य को (**नु**) शीघ्र(**यच्छन्तु**) देवें, वैसे हम लोगों को (**ऋतावानः**) सत्य की प्रकाश करनेवाली कन्याजन निरन्तर विद्या देवें। हे विदुषी स्त्रियों! (**यूयं**) तुम (**स्वस्तिभिः**) सुखों से (**नः**) हम लोगों की(**सदा**) सर्वदैव (**पात**) रक्षा करो।

भावार्थ – इस मन्त्र वाचकलुप्तोपमालंकार है– जो भूमि के तुल्य क्षमाशील, लक्ष्मी के तुल्य शोभती हुई, जल के तुल्य शान्त, सहेली के तुल्य उपकार करनेवाली विदुषी पढानेवाली हों, वे सब कन्याओं को पढा के और सब स्त्रियों को उपदेश से आनन्दित करें।

-* महाराष्ट्र सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन *-

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतर्गत सभी आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि, सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन रविवार दि.२३ अप्रैल २०२३ को सभा कार्यालय, आर्य समाज परली में रखा गया है। प्रातः ११ बजे सभा के संरक्षक पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती(हरिश्चन्द्र गुरुजी) की अध्यक्षता में यह निर्वाचन होगा। अतः सभी आर्य समाजें अपनी सभा प्रतिनिधियों को इस अधिवेशन में भेजें। साथ ही प्रतिनिधि शुल्क एवं आर्य समाजों का दशांश शुल्क भी जमा करें।

*** विनीत- राजेन्द्र दिवे(मंत्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा)**

म.दयानन्द का मानवता सुपथ!

यह सुनिश्चित है कि अखिल मानव जाति का शाश्वत सुख व कल्याण यह केवल व्यापक मानवीय मूल्यों में ही निहित है। इनके आचरण के बिना जीवन मानों शून्य सा है। मानवता का वह पावन सुपथ, जिसपर चलनें से संसार की सारी समस्याएं मिट जाती है, किसी प्रकार के सांप्रदायिक व जातिवादी भेदभाव नहीं रहते और सर्वत्र सुख, शान्ति व आनन्द की गंगा बहने लगती है। 'मानवता' का नाम तो सभी लोग लेते हैं। सारे मत-पंथ और बहुत सारे धार्मिक या सामाजिक संगठन मानवता की बात करते हैं। लेकिन क्या उनके पास सही अर्थों में मानवता विद्यमान है? यदि वे मानवता के पक्षधर हैं, तो फिर अन्यों के प्रति उनका नफरतभरा व भेदभावपूर्ण दुर्व्यवहार क्यों है? एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का शत्रु क्यों बन रहा है ? आपस में एकता क्यों स्थापित नहीं हो रही? दूरियां क्यों बढ़ रही हैं?

मानवता तो समानता का पाठ पढाती है, फिर परमात्मा आत्मा, भक्ति, उपासना आदि आध्यात्मिक विषयों में भिन्नताएं क्यों नजर आ रही है? सामाजिक जीवनचर्या में भी विलगता क्यों? ऐसे एक नहीं, अनेक प्रश्न उपस्थित होते हैं। इनके साथ ही आज तो सीमावाद,प्रांतवाद, भाषावाद, जातिवाद, संप्रदायवाद, वर्णवाद, नक्सलवाद आदि विवादों के घेरे में मानवता पीस रही है। अतः यह मानवता पूरी नहीं, बल्कि अधूरी है।

परमात्मा की अपार कृपा से और महान युगपुरुष महर्षि दयानन्द की अपूर्व ज्ञान व जीवन साधना से सही अर्थों में हमें वैदिक मानवता का पथ मिला। मानवता देखनी हो तो विशुद्ध वेदज्ञान में ही! वेद कहता है -**'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।'** अर्थात् संसार के लोगों! तुम पहले मनुष्य बनों और मनुष्य बनकर दिव्य समाज की स्थापना करो। इसी तरह सारे वेद मंत्र हमें मनुष्यता प्रदान करते हैं। वैदिक शिक्षाओं के परिपालन से सारा विश्वसमुदाय मानवता की पवित्र छाया में पूर्णतया सुख व शांति की सांसें ले सकता है। इसके विपरीत वेदज्ञान की अवहेलना करने से दुःख ही दुःख बढ़ता जाता है। अतीत हो या वर्तमान... संसार में अशांति के बढ़ने का कारण क्या हो, तो वह है महर्षि दयानंद द्वारा प्रतिपादित विशुद्ध वेदज्ञान की उपेक्षा करना! उनके विश्व कल्याणकारी व मानवतावादी व्यापक दृष्टिकोण को इस नासमझ दुनिया ने समझने व उसे आचरण में लाने का प्रयत्न ही नहीं किया। और क्या कहा जाए ? धर्म (संप्रदाय) व

संस्कृति के तथाकथित ठेकेदारों, बुद्धिजीवियों व नेताओं ने भी महर्षि की इस वेदविचारधारा का पदे पदे अवमूल्यन ही किया । क्योंकि अज्ञान व अविद्या को बनाए रखने से ही तो इनके स्वार्थ, स्वामित्व व सत्ता की जड़े मजबूत हो सकती है। अधार्मिक पाखंड व मिथ्या बातों से भरे भ्रमजाल को बढ़ाने में और महर्षि दयानंद की सत्य विचारधारा को रोकने में वे अपनी सारी शक्ति लगा रहे हैं, ताकि दुनिया को सत्यार्थ का प्रकाश ही ना मिलें ! एक दृष्टि से यह अमानवीय घोर अपराध ही है , जिसके भयावह परिणाम सारी मानव जाति अनेकों वर्षों से भुगत रही है।

भला दूसरी ओर आज के वैज्ञानिक युग में दयानंद के विचार सर्वथा परिपूर्ण होने पर और अन्य मत- पन्थों व बाबाओं के संकुचित विचारों में अपूर्णता होने पर भी पढ़ी-लिखी दुनिया सत्य और असत्य में विवेक क्यों नहीं कर पा रही है? भेड़ बकरियों की तरह दिन प्रतिदिन अज्ञान एवं अविद्या के गड्ढे में ही क्यों गिरती जा रही है ? छोटी-छोटी बातों का विज्ञान व तर्क के तराजू में तोलनेवाला बुद्धिजीवी वर्ग इस सत्य और असत्य को क्यों नहीं समझ पा रहा है ? महर्षि की मानवतावादी वैदिक विचारधारा इन्हें क्यों नहीं समझती ? आर्य समाज के सिद्धांतों से वह कैसे अनभिज्ञ रहती हैं? इसका कारण है सत्य विचारों के महत्व को ना समझना और इस पर चिंतन व मनन न करना !

यदि दयानंद का विचार मानना हो, तो फिर अन्ध परंपराओं को क्या होगा? इसलिए पता होते हुए भी वेद व दयानंद को अनदेखा किया गया, जो कि आज भी हो रहा है। इतना ही नहीं, अब तो आर्य समाज व महर्षि दयानंद का अस्तित्व ही मिटाने की साजिशें चल रही है। आर्य समाज व दयानंद को हिंदुत्व का ही एक भाग बताने के चल रहे पुरजोर प्रयत्न मानों पौराणिक अंधविश्वासों से समझौता करने के ही प्रयत्न है। यह तो एक तरह से महर्षि दयानंद और आर्य समाज के ही नहीं, बल्कि सृष्टि के शाश्वत सत्य को मिटाने का ही प्रयास है, जिसपर सिद्धांतवादी सच्चे आर्यों को अब सचेत सचेत रहना होगा।

इतिहास को उठा कर देखेंगें, तो पता चलता है कि सारे आपस के झगड़े, लड़ाइयां, खून खराबा, मारकाट और बड़े-बड़े युद्ध इन सभी की उपज मनुष्यकृत धर्म अर्थात संप्रदाय ही रहे हैं। आज देश व विदेशों में यही हो रहा है। संप्रदाय और अधिक तीव्र हो रहे हैं। जहां अन्य देशों में सांप्रदायिकता बढ़ रही हैं, वही अपने देश

(शेष पृष्ठ संख्या २४ पर...)

वाल्मीकि के 'श्रीराम'

- पं.रामनिवास 'गुणग्राहक'

वाल्मीकि रामायण आदि काव्य के रुप में विश्वप्रसिद्ध ग्रंथ है। यही कारण है कि, देश-विदेश के प्रायः सभी ऐतिहासिक ग्रन्थों में रामायण का उल्लेख व इसके उपयोगी प्रसंगों का वर्णन मिलता है। महाभारत के चार स्थलों- रामोपाख्यान, आरण्यक पर्व, द्रोणपर्व और शान्तिपर्व में रामायण का उल्लेख है। बौद्ध साहित्य की बात करें, तो जातक कथा, अनामक जातक और दशरथ कथानक ये तीनों का कथानक रामायण से ही प्रसूत हैं। जैन साहित्य में विमल सूरि कृत पउम चरित्(प्राकृत भाषा), रविषेण आचार्यकृत पद्मपुराण(संस्कृत), स्वयम्भूकृत पउम चरिउ(अपभ्रंश), रामचन्द्र रचित पुराण तथा गुणभद्रकृत उत्तर पुराण(संस्कृत) आदि ग्रन्थ स्पष्टतः रामायण के उपजीव्य कहे जा सकते हैं। जैन परम्परा के अनुसार श्रीराम का मूल नाम पद्म था। इनके अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं की बात करें, तो मराठी में आठ, तेलगू में पाँच, तमिल में बारह, हिन्दी में ग्यारह, बंगला में पच्चीस और उडिया भाषा में छः ग्रन्थ राम के जीवनवृत्त पर आधारित हैं।

देश की सीमाओं के बाहर निकले तो विश्व की अनेक समृद्ध भाषाओं में रामायण का अनुवाद मिलता है। अंग्रेजी, रसियन और जर्मन भाषा में रामायण के अनुवाद बडे लोकप्रिय रहे हैं। थाइलैण्ड की राजधानी बैंकाक के संग्रहालय के सामने श्रीराम की अष्टधातु की धनुषधारी रूप में सुन्दर प्रतिमा लगी है। थाइलैण्ड में तो अयोध्यानगरी और मिथिलापुरी भी हैं। लन्दन के ब्रिटिश म्यूजियम के पुस्तकालय में चार खण्डों की एक हस्तलिखित ऐसी रामायण है, जिसके प्रत्येक खण्ड का भार लगभग २० किलो है। यह रामायण उदयपुर के महाराज जगतसिंह ने वि.सम्वत् १७०३ में एक जैन साधु सोमदेव सूरि से लिखवाकर तैयार कराई थी। इसके एक पृष्ठ पर अर्थसहित श्लोक लिखे हैं और उसके सामने के पृष्ठ पर श्लोकों में वर्णित विषयों पर आधारित सुन्दर रंगीन चित्र है। सम्भव है देश-विदेश में रामायण

आधारित कुछ लुप्त-गुप्त सामग्री और भी मिल जाए!

वाल्मीकि रामायण को आदि काव्य इसलिए कहते हैं, क्योंकि इससे पहले ऐतिहासिक सामग्री संकलन की परम्परा नहीं मिलती। धर्मशास्त्र, आचारशास्त्र, नीतिग्रन्थ, यज्ञ-संस्कार आदि के कर्मकाण्ड ग्रन्थ और अध्यात्मपरक साहित्य की परिपाठी से हटकर जब महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम का जीवन चरित्र लिखा, तो समकालीन ऋषि-मुनियों को यह बडा अटपटा लगा। वे वाल्मीकि से इसका कारण पूछने लगे, तो महर्षि वाल्मीकि ने रामायण लिखने का उद्देश्य बताया -

रामादिवत् प्रवर्तितव्यं न तु रावणादिवत्।

वाल्मीकि बताते हैं कि रामायण लिखकर मैं आनेवाली पीढियों को यह सन्देश देना चाहता हूँ कि वे राम की तरह अपना जीवन बनाये, रावण की तरह नहीं। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण लिखने में जो तप और श्रम किया है, उसकी सार्थकता इसी में है कि हम सब जो स्वयं को महर्षि वाल्मीकि की सन्तान मानते हैं, राम के भक्त मानते हैं, वे अपना और अपने पुत्र-पौत्रों का जीवन राम जैसा बनायें, रावण जैसा नहीं।

महर्षि वाल्मीकि की दृष्टि में श्रीराम पूजा के नहीं, आचरण के योग्य हैं। हम अगर रामायण पढकर श्रीराम जैसे बनने का प्रयास करें, तभी रामायण पढना सफल और सार्थक है। आइये, अब ये देखने का प्रयास करते हैं कि श्रीराम कैसे थे..?

अगर हम वाल्मीकि रामायण पढकर देखें, तो पता चलता है कि श्रीराम एक आदर्श पुत्र थे, एक आदर्श भाई थे, एक आदर्श पति थे, आदर्श मित्र थे। श्रीराम आदर्श योद्धा थे, आदर्श विद्वान थे, आदर्श राजा थे। वनवास देने के प्रसंग में जब कैकयी ने कहा कि, महाराज इसलिए नहीं बोल रहे, उन्हें भय है कि, तुम उनकी आज्ञा का उल्लंघन न कर दो। तब राम कहते हैं कि, 'मैं पिताजी के कहने पर अग्नि में जलाकर शरीर को भस्म कर सकता हूँ, समुद्र में छलांग लगा सकता हूँ, हलाहल विष पीकर प्राण दे सकता हूँ।' कैकेयी ने कहा, आज्ञा पालन करोगे, तो तीन वचन दो। वाल्मीकि के शब्दों में तब श्रीराम कहते है, **'रामो द्विर्नाभिभाषते।'** अर्थात् हे माँ! राम दोबार नहीं बोलता, जो एक बार बोल दिया, उसी पर अटल रहता है।' वनवास के प्रारम्भ में जब सुमन्त लौट आए, तो श्रीराम ने सरयू के निकट

एक रात प्रवास किया। सायंकाल गुह जब भोजन लेकर आया तो श्रीराम ने गुह से कहा- **'न हि अस्माभिः प्रतिग्राह्यं सखे देयं तु सर्वदा।'**- हे भ्रात गुह! हम आपका भोजन लेने में असमर्थ है, मित्र हमने सदैव दिया ही है, लिया कभी नहीं।' इस उत्तर में जहाँ उच्च शिष्टाचार झलकता है, वहीं श्रीराम का बडप्पन भी!

मानवता और उदारता का अनूठा आदर्श श्रीराम में तब दिखता है, जब रावण मरण के बाद संकोचवश विभीषण अन्तिम संस्कार के लिए आगे नहीं बढ पाते, तब राम कहते हैं- 'हे विभीषण! रावण की मृत्यु के साथ हमारा वैर भी समाप्त हो गया। सीता के मिलने में अब कोई बाधा नहीं। यही हमारा उद्देश्य था। तुम इसका अन्तिम संस्कार करो, अब ये जैसा तुम्हारे लिये, वैसा ही मेरे लिये है। मानवता के प्राप्त इतिहास में युद्ध में पराजित शत्रु के लिए ऐसी मानवता, इतने महान् वचन कहीं नहीं मिलेंगे। ऐसे अनेक देवदुर्लभ गुणों के कारण ही श्रीराम लगभग नौ लाख वर्ष बाद भी देश-विदेश के जन-मन में सजीव हैं। इन्हीं गुणों के कारण महर्षि वाल्मीकि ने कहा था- **'आनेवाली पीढियाँ राम जैसे बनें, रावण जैसी नहीं।'**

- भरतपूर (राजस्थान)
मो.९०७९०३९०८८

औराद - पाँच महात्माओं का गौरव- प्रा.सोनेरावजी आचार्य का संदेश

आज से पचास वर्ष पूर्व जब मैं अंबाजोगाई में पढ़ता था, तब पूज्य हरिश्चंद्र गुरुजी (स्वामी श्रद्धानन्दजी)का बार-बार मेरे रूम पर आना, मुझे सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथ पढ़ने को देना, मुझे अभी भी स्मरण है। आज मैं जहां हूँ, जो कुछ हूँ , जितना जैसा हूँ, आज मुझमें यदि कुछ अच्छा, आकर्षक और प्रभावशाली है, तो उसका श्रेय पूज्य हरिश्चंद्र गुरुजी (स्वामी श्रद्धानन्दजी) को है। स्वामी जी आप धन्य धन्य हैं। उसी प्रकार पूज्य ब्रह्ममुनिजी जब प्रा. डॉ काले सर थे, तब से मेरे जीवन की दिशा और दशा बदलने में उनका बड़ा भारी योगदान रहा है। उनके तीनों पुत्रों का विवाह संस्कार मैं ही करूं, ऐसा उनका प्रबल आग्रह था। पूज्य ब्रह्ममुनिजी का पूरा जीवन अत्युच्च आदर्शों से ओतप्रोत है। ब्रह्ममुनिजी... आप धन्य हैं। तीसरे गौरव मूर्ति पूज्य विज्ञानमुनिजी हैं। अन्नाराव पाटील... किसान से व्यापारी, व्यापारी से वैद्य और वैद्य से वानप्रस्थी बनें। कोई व्यक्ति सामान्य से कितना और कैसा विशेष बन सकता है, मुनिजी का जीवन इसका उत्तम उदाहरण है। विज्ञानमुनिजी आप धन्य हैं...।

उसी प्रकार स्वर्गीय पूज्य शिवमुनि जी एवं स्वर्गीय पं.विश्वामित्र जी अन्य दो ऐसे नक्षत्र थे, जो अपनी प्रभा से आसमन्त प्रकाशित कर अस्त हो गए हैं। इन सभी को मेरा सादर अभिवादन।

क्या हनुमान बन्दर थे ?

- स्मृतिशेष पं.राजवीर शास्त्री

(सम्पादक–दयानन्द सन्देश मासिक)

रामायण में श्रीराम के साथ वीर हनुमान का चरित्र भी महत्त्वपूर्ण हैं। रामायण में हनुमान का मिलन सर्वप्रथम सीता की खोज में निकले राम लक्ष्मण को किष्किन्धा काण्ड में ऋष्यमूक पर्वत पर होता है। हनुमान सुग्रीव का मंत्री था, सुग्रीव बाली के भय से ऋष्यमूक पर्वत पर रहता था। राम–लक्ष्मण को देखकर सुग्रीव ने विचार किया कि सम्भव है, इन दोनों को बाली ने ही भेजा है। ब्राह्मण का वेष बनाकर हनुमान राम–लक्ष्मण के पास गये और भाषण की कला में चतुर बहुत विनीत भाव से, राम लक्ष्मण से को प्रणाम करके प्रथम अपना परिचय दिया– (किष्किन्धा.३ सर्ग)

सुग्रीवो नाम धर्मात्मा कश्चिद् वानर पुँगवः।
वीरो विनिकृतो भ्रात्रा जगद् भ्रमति दुःखित।।

अर्थात् वानर जाति में श्रेष्ठ, धर्मात्मा सुग्रीव अपने भाई बाली से तिरस्कृत होकर इस पर्वत पर रहता है, मैं उसका मंत्री हूं और वह आपसे मित्रता चाहता है। हनुमान को भाषण शैली व व्यवहार से अतीव प्रसन्न होकर श्रीराम व लक्ष्मण से जो हनुमान जो कि विद्वत्ता का वर्णन किया है, वह बहुत ही प्रशंसनीय है– (किष्किन्धा.३ सर्ग)

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
नासामवेद विदुषः शक्यमेवं प्रभाषितुम्।।
नूनं व्याकरण कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहुव्याहरताऽनेन न किंचिदपशब्दितम्।।

अर्थात् हे लक्ष्मण! जिस व्यक्ति ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद न पढे हो, वह ऐसी संस्कृत भाषा नहीं बोल सकता है। निश्चित रूप से इसने सम्पूर्ण व्याकरण को भी पढा हैं, क्योंकि इसके भाषण में कहीं भी व्याकरण की दृष्टि से एक भी अशुद्धि नहीं हुई। ऐसे वेद–वेदाङ्गों के महाविद्वान् वीर हनुमान जी को जो व्यक्ति बन्दर मानकर उनकी बन्दर जैसी मूर्ति बनाकर पूजते हैं, उन्हें श्रीराम के उपर्युक्त वचनों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। क्या कभी बन्दर भी वेद–वेदांगों को पढकर शुद्ध भाषण कर सकते हैं ?

हनुमान सुग्रीव के मंत्री थे। जैसे प्रशासनिक कार्यों के लिए आजकल आई.ए.एस. की परीक्षा पास करना

आवश्यक होता है, ठीक वैसे ही प्राचीन काल में भी प्रशासनिक कार्यों की योग्यता बताते हुए लिखा है –

'मौलान् शास्त्रविदः शूरान्
लब्धलक्षान् कुलोद्गतान्'(मनु.७/५४)

अर्थात् मंत्री बनने के लिए निम्नलिखित योग्यताएँ होनी चाहिए– १) स्वदेश में उत्पन्न २) वेदशास्त्रों का विद्वान् ३) शूरवीर ४) जिनका लक्ष्य–विचार निष्फल न हो, ५) और उच्चकुल में पैदा हुआ हो! इन गुणों से सम्पन्न व्यक्ति को ही मंत्री बनाया जाए। इससे स्पष्ट है – हनुमान जी में भी मंत्री के योग्य समस्त योग्यतायें थी। क्या ये योग्यतायें बन्दरों में कदापि सम्भव है?

वीर हनुमान् सीता की खोज करता हुआ लंका नगरी में, विशेष रूप में रावण के अन्तःपुर में प्रविष्ट होकर सब जगह घूम आये, किन्तु कोई इन्हें देख नहीं सका। रामायण में लिखा है–

चतुरङ्गुलमात्रोऽपि नावकाशः स विद्यते।
रावणान्तःपुरे तस्मिन् यं कपिर्न जगाम सः।।
(सुन्दर.१२ वासर्ग)

अर्थात् रावण के अन्तःपुर में कोई चार अंगुल परिणाम वाला स्थान भी ऐसा नहीं रहा था, जहां हनुमान न गये हो। स्थान–स्थान पर पहरेदारों से घिरे अन्तःपुर में प्रवेश करना कोई सरल कार्य तो नहीं था। इससे यह स्पष्ट होता है कि हनुमान वीरता के साथ योग सिद्धियों से भी सम्पन्न था।जैसा कि योगदर्शन में लिखा है– **कायाकाशयोः सम्बन्धसंयमात् लघुतूलसमापत्तेश्च आकाशगमनम्।।**(योग.३/४१) अर्थात् शरीर और आकाश के सम्बन्ध संयम से शरीर रुई की भाति हल्का हा जाता है। वैसे तो यह योगियों की साधना का क्षेत्र है, पुनरपि शास्त्र वचन से ऐसी सिद्धियाँ प्राप्त करना बन्दरों के लिए सम्भव है ?हनुमान वेष भी बदलते रहते थे। जैसे ऋष्यमूक पर्वत पर राम–लक्ष्मण के साथ प्रथम मिलन के समय ब्राह्मण भिक्षुक का भेष बनाया था। (किष्किन्धा.सर्ग–२)

कपिरूपं परित्यज्य हनुमान् मरुतात्मजः।
भिक्षुरूपं ततो भेषे शठबुद्धतया कपिः।।

अर्थात् हनुमान जी कपि रूप को छोडकर भिक्षुक का वेष बनाकर राम और लक्ष्मण से मिले। यहां यह विचारणीय है कि क्या कोई बन्दर ब्राह्मण भिक्षुक का वेष बना सकता है ? और वानर, ऋक्ष, राक्षस, निषाद, शबर, गृध्र इत्यादि रामायण कालीन जन जातियों के भारत में ही राज्य थे। क्या इनके वंश अब सर्वथा नष्ट मान लिए

जायें कि जो आजकल उपलब्ध नहीं होते। जैसे सूर्य वंशी राम के वंशज अब भी हैं, वैसे ही इनके वंशज अब भी मिलने चाहिए। किन्तु ऐसा न मिलने से स्पष्ट है कि ये पशु पक्षी कदापि नहीं थे।

*** रामायण में प्रयुक्त वानर आदि शब्दों का क्या अर्थ है ? –**

इस विषय में पर्याप्त अनुसंधान की आवश्यकता है । प्रतीत यही होता है कि इस लोक में शब्दों की समानता लेकर ही भ्रान्ति हुई है। जैसे जनक पुत्री का नाम सीता था और हल की रेखा को भी संस्कृत में सीता कहा जाता है। इस शब्द की समता को लेकर ही सीता को हल चलाते हुए प्राप्त करने की बात प्रसिद्ध हो गई। प्रायः ऐसा होता है कि लोकप्रसिद्ध शब्दों के अर्थ शब्द श्रवण करते ही उपस्थित हो जाते हैं। वानरादि के भी बन्दर आदि अर्थ जो लोक प्रसिद्ध हो रहे हैं, उन्हीं को ध्यान में रखकर रामायण कालीन पत्रों के वेष आदि बना लिए गये हैं, परन्तु हमें रामायण कालीन व्यवहार को भी समझना पडेगा, तब कहीं सत्यार्थ समझ में आ सकेगा। इस विषय में आर्य विद्वानों के अतिरिक्त व्यक्ति तो विवेक से काम नहीं लेना चाहते। उनमें कुछ तो श्रद्धावश वैसा का वैसा हो स्वीकार कर लेते हैं, अथवा इन पात्रों को काल्पनिक मानने लगते हैं। किन्तु ये दोनों ही बातें तथ्यों को उजागर नहीं कर पाती। आर्य विद्वानों की खोज के अनुसार हनुमान सुग्रीव आदि वानर तो थे, परन्तु बन्दर नहीं। रामायण में प्रयुक्त वानर, कपि आदि शब्दों का प्रयोग फिर किस अर्थ से होता था, इसका समाधान आर्य विद्वानों की दृष्टि में इस प्रकार किया गया है–

* **वानर–** जैसे वर्तमान में भी मनुष्य जाति में अनेक उपजातियाँ मिलती हैं, वैसे ही रामायण काल में भी थी। वानर जाति को 'वानर' कहने का भाव यह हो सकता है–वानर=वा+नर = एक विशेष प्रकार के नर = नेतृत्व गुण युक्त मनुष्य अथवा वन में रहने के कारण उनका नाम वानर पडा हो! इस जाति के व्यक्तियों में स्थान भेद से कुछ आकृति भेद तो हो सकता हैं, जैसे कि नेपाल व चीन आदि मनुष्यों का भेद देखने में आता है। परन्तु ये थे मनुष्य ही! मनुष्यों जैसी भाषा बोलते थे, इनके सभी व्यवहार मनुष्यों की तरह ही थे। हमें यह देखकर महान् आश्चर्य ही होता है कि रामायण के सीरियलों में रामानंद सागर ने भी हनुमान आदि पात्रों की आकृति पूंछ आदि लगाकर बन्दरों जैसी ही बनायी है। किसी ने यह भी विचार

नहीं किया कि रामायण में आयी वानर जाति के स्त्री पात्रों की पूंछ क्यों नहीं लगायी? क्या बन्दरों की भांति बन्दरियों की पूंछ नहीं होती?

* **कपि**– इस शब्द का लौकिक अर्थ बन्दर अवश्य है, परन्तु इसके अन्य अर्थ भी हैं। वैदिक साहित्य में कपि तथा 'वृषाकपि' शब्द आये हैं। जिनका अर्थ है- कपि = कम्पानेवाला या धर्म सुख या जलादि की वर्षा करने वाला अथवा अपनी शूरवीरता से दुष्टों को कंपाने वाला! और महाभारत के शान्तिपर्व में (३४२ अ.८६ श्लोक में) कहा है- **कपिर्वराहः श्रेष्ठश्च।।** अर्थात् कपि शब्द का श्रेष्ठ अर्थ भी है।

* **लांगूल**– इस का अर्थ पूंछ भी है, किन्तु रामायण में वानर जाति का एक आभूषण या चिह्न लांगूल कहलाता था। जैसे कि लिखा है-

कपीनां किल लांगूलमिष्टं भवति भूषणम्। (रामा.सुन्दर.५३ वां सर्ग)

अर्थात् कपि जाति के व्यक्तियों को लांगूल नामक भूषण बहुत प्रिय होता है। इसकी वे युद्ध के समय रक्षा प्राण-पण से किया करते थे। जैसे आर्यों का यज्ञोपवीत, शिखा आदि चिह्न रक्षा करने योग्य होते हैं। इसी प्रकार अन्य शब्द भी गवेषणा सापेक्ष हैं।

अतः केसरी व अंजनीदेवी के सुपुत्र हनुमान वानर होते हुए भी बंदर नहीं थे। वे अपने वर्ग के अपने समय में एक बहुत प्रतिष्ठित बाल ब्रह्मचारी महान् विद्वान्, शूरवीर योद्धा, महायोगी और सुग्रीव के महामंत्री थे। हनुमान श्रीराम के परम सेवक होकर भी बहुत ही निरभिमानी विनम्र स्वभाव के थे। व्याकरणादि शास्त्रों के ज्ञाता होने से उनका उच्चारण बहुत ही स्पष्ट एवं शुद्ध होता था। बन्दर तो कभी स्पष्ट भाषण भी नहीं कर सकता। क्योंकि उसके गले की रचना मनुष्य से भिन्न है। बन्दर का गला सिकुडा हुआ होता है। वह तो किलकारीही मार सकता है। चीख सकता है, किन्तु मनुष्यों जैसी व्यक्तवाणी कदापि नहीं बोल सकता। अपने यशस्वी एवं परमादर्श हनुमान जैसे पात्रों का पूंछ आदि लगाकर जो उनका अपमान करते रहते हैं, वे यथार्थ में अतीव निन्दनीय हैं। केसरी, अंजनी, हनुमान, सुग्रीव आदि नाम भी इन्हें बन्दर सिद्ध नहीं करते। क्योंकि बन्दर जाति के नाम होते ही नहीं! आर्य जाति हनुमान के चित्रों की विकृत रचना करके तो अज्ञानवश पूजा करती है, किन्तु हमें उनको आदर्श चरित्र व शौर्यपूर्ण गाथाओं की ही पूजा अपने आचरण में करनी चाहिए।

(साभार–दयानन्द सन्देश, 'मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम विशेषांक', अप्रैल–मई १९९०)

***

आर्य समाज के १४८वें स्थापना दिवसपर गृहमन्त्री अमित शाह का सम्बोधन

महर्षि दयानन्द ने देश की आत्मा को जगाया!

आर्य समाज की स्थापना कर स्वामीजी ने मानव जाति पर उपकार किये!

'आर्य समाज की स्थापना करके महर्षि दयानंद ने सालों से सोई हुई इस देश की आत्मा को जागृत करने और वेद व्यास के बाद वेदों के उद्धार और उन्हें मूल स्वरूप में लाने का काम किया। महर्षि दयानंद ने देश के सांस्कृतिक और बौद्धिक जागरण की बहुत तीव्र गति से शुरूआत की, अनेक क्रांतिकारियों के प्रेरणास्त्रोत रहे और देश में अनेक सामाजिक सुधारों के जनक रहे। महर्षि का इस देश और पूरी सृष्टि पर हमेशा ये उपकार रहेगा कि उन्होंने आर्य समाज की स्थापना करके अपने विचारों और कार्यों को स्थायित्व देने का काम किया।' ये मौलिक विचार थे भारतवर्ष के केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के। दि.२१ मार्च २०२३ को आज नई दिल्ली में आयोजित आर्य समाज के १४८वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में वे आर्यों को सम्बोधित कर रहे थे।

अपने संबोधन में अमित शाह ने कहा कि आज हम आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। महर्षि दयानंद ही वे महान् व्यक्ति थे, जिन्होंने पहली बार स्वतंत्रता का उद्घोष किया था। स्वराज, स्वभाषा और स्वधर्म का प्रचार प्रसार करके अनेक लोगों को उसके साथ जोड़ने का काम महर्षि दयानंद जी ने किया था। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत सरकार महर्षि दयानंद जी की २००वीं जयंती मनाने का निर्णय कर चुकी है। श्री मोदीजी जो देश जागरण का काम कर रहे हैं, उसकी मूल कल्पना महर्षि दयानंद के जीवन और कार्यों से ली गई है। अमित शाह ने कहा कि महर्षि दयानंद ने अंधश्रद्धा से घिरे हुए देश को झंझोड़कर जागृत किया, कई कुरीतियों से मुक्त किया और सत्य को '**सत्यार्थ प्रकाश**' के माध्यम से पूरी दुनिया के सामने रखा। उन्होंने अंग्रेज़ी शासन के सामने निर्भीकता के साथ अनेक लोगों को आज़ादी के लिए लड़ने का हौंसला दिया। उन्होंने आर्य समाज के रूप में एक ऐसी परंपरा की

स्थापना की, जो अनेक वर्षों तक भारत की उन्नति और विश्व के कल्याण का कारण बनेगी।

अमित शाह ने कहा कि महर्षि दयानंद की २००वीं जयंती के साथ-साथ आने वाले २ सालों में कई कार्यक्रम होंगे और उसी वक्त आर्य समाज के १५० साल भी पूरे होंगे, ये पूरे देश और विश्व के भारतीयों के लिए गर्व का क्षण होगा। प्राकृतिक खेती से ना केवल पृथ्वी और मिट्टी का कल्याण होने वाला है, बल्कि गौ माता के संरक्षण और संवर्धन से पूरी दुनिया का कल्याण होने वाला है। मोदी सरकार ने भी प्राकृतिक खेती का पूरा समर्थन करके लाखों किसानों को यूरिया और डीएपी से मुक्त करके एक बार फिर से पृथ्वी माता को गुणवत्ता से भरपूर बनाना और मानव शरीर को रोगमुक्त करने का अभियान चलाया है। आर्य समाज की नशे के खिलाफ लड़ाई समयानुसार है और इसके अलावा जनजाति क्षेत्रों में गले लगाइये, दूरी मिटाइये जैसा कार्यक्रम आर्य समाज के सिवा और कोई नहीं चला सकता।

श्री शाह ने कहा कि बाल्यकाल में सत्य की खोज में निकला हुआ एक बालक महर्षि दयानंद बनकर अपने पीछे विश्व के लिए एक महान परंपरा को छोड़कर गया। स्वदेशी और स्वभाषा का स्वाभिमान पहली बार निर्भीकता के साथ रखने का काम महर्षि दयानंद ने किया।महर्षि दयानंद मानते थे कि वेदों का ज्ञान ही भारत की उन्नति का मूल कारण है, इसीलिए उन्होंने वेदों के ज्ञान को ही मूल आधार मानते हुए अपना पूरा जीवन जिया और **'वेदों की ओर लौटो'** का मंत्र दिया, जो आज भी अनेकानेक लोगों के लिए प्रेरणास्त्रोत है। स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा हंसराज, पंडित गुरुदत्त और लाला लाजपतराय ने उस ज़माने में देश के युवाओं और देशप्रेमियों को देशभक्ति, स्वभाषा और स्वधर्म का संस्कार दिया।

अमित शाह ने कहा कि भारत की आज़ादी का इतिहास आर्य समाज के योगदान का उल्लेख किए बिना नहीं लिखा जा सकता। अनेक क्रांतिकारियों को बनाने का काम आर्य समाज के गुरूकुल की श्रंखलाओं ने किया। आर्यसमाज ने बंग-भंग का भी पुरज़ोर विरोध किया। हैदराबाद मुक्ति संग्राम और गोवा मुक्ति संग्राम में भी आर्य समाज झंडा उठाकर सबसे आगे था। अमित शाह ने कहा कि १८५७ की क्रांति की विफलता के बाद एक प्रकार से पूरा देश बिखर गया था, उस वक्त महर्षि दयानंद ने इस बात को समझ लिया था कि इस देश की एक भाषा तय करनी होगी और संपर्क भाषा बढ़ानी होगी और

इसीलिए उन्होंने बोला, लिखा और जिया भी हिन्दी में! आज जब भी हम 'नमस्ते' कहते हैं, तो हमेशा याद रखिए कि ये सर्वकालीन और संपूर्ण भारतीय अभिवादन महर्षि दयानंद की ही देन है और भारत को इसे कभी नहीं भूलना चाहिए।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि हिंदू धर्म और आर्य समाज के अनुयायी कभी संकुचित हो ही नहीं सकते, क्योंकि हम तो पूरे ब्रह्मांड को अपना मान कर चलने वाले लोग हैं। शिक्षा, वंचित वर्ग के बच्चों के लिए पाठशालाओं का निर्माण, अनाथालय का निर्माण, महिला शिक्षा का काम और विधवा विवाह का भी समर्थन आर्य समाज ने किया। इतने सारे कामों की एक जीवन में कल्पना करना भी असंभव है और एक व्यक्ति कैसे अपने अल्प जीवन में इतने सारे आयामों को छू सकता है और ऐसे अनुयायियों की फौज खड़ी करना। आर्य समाज के अनुयायियों के प्रयासों से आज विश्व के ३४ देशों में आर्य समाज का संगठन वटवृक्ष बनकर खड़ा है। आर्य समाज के काम को भी एक नई गति देने की जरूरत है, दिशा ना बदले मगर गति और व्यापकता बढ़ाने की जरूरत है, तभी देश के सामने खड़ी चुनौतियों का हम सामना कर पाएंगें। आर्य समाज हर विषय पर काम कर सकता है और आज भी इसकी उतनी ही ज़रूरत महसूस होती है। आज हमारे लिए एक आशा की किरण यह है कि देश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार चल रही है और सरकार के सारे इनीशिएटिव आर्य समाज के मूल में हैं। स्वभाषा की बात, समृदध राष्ट्र की कल्पना, दुनिया में देश का सम्मान बढ़ाना, योग और आयुर्वेद को पुनर्जीवित करना हमारी संस्कृति की ओर लौटने और आर्य समाज की ही बात है। उन्होंने कहा कि आज मोदी सरकार ढेर सारी चीजों को पुरस्कृत कर रही है, गति दे रही है और इनके लिए योजना बना रही है।

-* आठ गुणों से मनुष्य का प्रकाश *-

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति, प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमःच अबहुभाषिता च दानं यथाशक्तिः कृतज्ञता च।।(विदुरनीतिः)

अर्थ – प्रज्ञा(बुद्धि), कुलीनता, इन्द्रियों का दमन, वेदादि शास्त्रों का ज्ञान, पराक्रम, मितभाषिता(कम बोलना), यथाशक्ति दान एवं कृतज्ञता ये आठ गुण मनुष्य को प्रदीप्त कर देते है। उसके यश व कीर्ति को विश्व में पहुंचा देते हैं।

सभाद्वारा ७ स्थानों पर होंगे

मानवता संस्कार एवं आर्य वीर दल शिविर

विद्यार्थियों व युवकों का नवनिर्माण हो, इस उद्देश्य से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में राज्य के विभिन्न ७ स्थानों पर '**मानवता संस्कार एवं आर्यवीर दल शिविरों**' का भव्यता के साथ आयोजन हो रहा है। राज्य आर्य वीर दल के नेतृत्त्व में स्थानीय आर्य समाजों व शिक्षा संस्थानों के पूर्ण सहयोग से ये शिविर सम्पन्न होंगे। प्रातः ४.३० से रात्रि ९.३० बजे तक व्यस्त दिनचर्या में शिबिरार्थियों को योगासन, प्राणायाम, सर्वांगसुंदर व्यायाम, ज्युडो-कराटे, मल्लखम्भ, विविध खेल, लाठीकाठी, तलवारबाजी तथा अन्यों का प्रशिक्षण दिया जायेगा। साथ ही संध्या, यज्ञ के साथ ही विभिन्न विषयों पर भजन व प्रवचन भी होंगें।

मार्गदर्शक हेतु प्रख्यात प्रशिक्षक आचार्य श्री हरिसिंहजी (दिल्ली), युवा प्रशिक्षक श्री धर्मेन्द्रकुमारजी आर्य (मुम्बई) एवं अन्य विद्वान पधार रहे है।

- विस्तृत कार्यक्रम -

१) दि.१३ से २४ अप्रैल २०२३- जनजागृती विद्यालय, लिंगन केरूर देगलूर

२) दि.२४ से ३० अप्रैल २०२३- श्री ज्ञानगंगा गुरुकुल वसतिगृह, परभणी

३) दि.१ से ७ मई २०२३ - आर्य समाज, शिवणखेड

४) दि.८ से १४ मई २०२३ - श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली-वै.

५) दि.१५ से २१ मई २०२३ - आर्य समाज, गान्धी चौक, लातूर

६) दि.२२ से २८ मई २०२३ - आर्य समाज, उदगीर(कन्या शिबिर)

७) दि.१५ से २१ मई २०२३ - यशवंत विद्यालय एवं जिजामाता कन्या विद्यालय, लातूर

अतः आप सभी से अनुरोध है कि अपने परिसर के छात्रों एवं युवको इन अपने समीपस्थ शिविरों में अवश्य भेंजे! शिविरों में कक्षा पाँचवी से पदवी अन्तिम वर्ष तक पढनेवाले छात्रों को प्रवेश दिया जाएगा। शिविरों की सफलता हेतु स्थानीय आर्य समाज के पदाधिकारी, आर्यवीर दल के व्यायाम प्रशिक्षक तथा शिक्षा संस्थानों के सदस्य प्रयत्नशील हैं। अधिक जानकारी के हेतू श्री व्यंकटेशजी हालिंगे (अधिष्ठाता, महाराष्ट्र आर्यवीर दल) एवं सभामन्त्री श्री राजेन्द्र दिवे इनसे सम्पर्क करें।

* * *

स्वामी सोममुनिजी के सान्निध्य में दुसरी बार

गुरुकुल परली में 'चतुर्वेद पारायण यज्ञ'

आर्य समाज परली-वैजनाथ द्वारा संचालित श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम में इस समय में चतुर्वेद पारायण यज्ञ चल रहा है। आश्रम के ९९ वर्षीय तपस्वी साधक पूज्य स्वामी सोममुनिजी के निर्देशन व सान्निध्य में चल रहे इस चतुर्वेद पारायण यज्ञ में प्रातः - सायं गुरुकुल के ब्रह्मचारी मधुर स्वर में वेदमन्त्रों का पाठ करते हुए सश्रद्ध आहुतियां प्रदान कर रहे हैं।

यज्ञमय जीवन व्यतीत करनेवाले श्री स्वामीजी महाराज अपनी अन्तःप्रेरणा से इस 'चतुर्वेद पारायण यज्ञ' में संलग्न हैं। ब्र.काशीनाथ, ब्र.सुजल, ब्र.आनंद, ब्र.निशांत, ब्र.सुजल, ब्र.प्रताप, ब्र.जयदेश आदि छात्र इस यज्ञीय कर्म में जुडे हैं। यज्ञ के पश्चात् गुरुकुल के आचार्य श्री सत्येन्द्रजी वैदिक मन्त्रों की व्याख्या करते हैं।

पिछले वर्ष भी श्री स्वामीजी ने लगभग चार महिनों तक इसी तरह का चतुर्वेदीय यज्ञ का अनुष्ठान किया था। जिसमें दानदाता श्री जयकिशोरजी दोडिया (परली), श्री दिनेशजी वाधवानी (इचलकरंजी), तथा स्वामीजी के दोनों सुपुत्र श्री रमेशजी व श्री उमेशजी स्वामी(बार्शी) तथा अन्यों का सहयोग मिला था। इस वर्ष के द्वितीय पारायण यज्ञ के लिए भी दानदाताओं का सहयोग मिल रहा है।

द्विजन्मशताब्दी में महाराष्ट्र के पदाधिकारी सम्मिलित

गत माह दि.१२ फरवरी २०२३ को राजधानी दिल्ली में महर्षि दयानन्द द्विजन्मशताब्दी वर्ष का भव्य उद्‌घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। देश के यशस्वी प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने इस ऐतिहासिक जयन्ती वर्ष का उद्‌घाटन किया। गणमान्य वरिष्ठ आर्यनेताओं, सन्यासी-विद्वानों, आचार्यों तथा हजारों आर्य नर-नारियों की उपस्थिति से जहां इस समारोह की सफलता शिखर पहुंची, वहीं प्रधानमन्त्री श्री मोदीजी के जोशपूर्ण सम्बोधन से आर्य जगत् में नये उत्साह की लहर छा गयी।

इस समारोह में महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री योगमुनिजी, मन्त्री श्री राजेन्द्र दिवेजी, कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेन राठौरजी, उपप्रधान श्री दयाराम बसैयेजी, उपमन्त्री प्रा.अर्जुनराव

सोमवंशी, आर्यवीर दल अधिष्ठाता श्री व्यंकटेशजी हालिंगे, अंतरंग सदस्य एड.श्री जोगेन्द्रसिंहजी चौहान, वैदिक गर्जना पत्रिका के सम्पादक प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य, के.एस.के. होमिओपेथी महाविद्यालय, बीड के प्राचार्य डॉ.श्री महेन्द्रकुमारजी गौशाल, लातूर आर्य वीर दल प्रमुख ॲड.श्री विजयकुमारजी सलगरे आदि सम्मिलित हुए।

इन सभी ने द्विजन्मशताब्दी शुभारम्भ समारोह में सोत्साह सहभाग लेकर अन्त में समारोह के प्रमुख अतिथि गुजरात के राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रतजी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य, एड.प्रकाशजी आर्य, समारोह के कुशल संचालक एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्यजी से मुलाकात की और विचारविमर्श किया। साथ ही रात्रि में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि कार्यालय में आयोजित 'म.दयानन्द द्विजन्मशताब्दी समारोह समिति' की महत्त्वपूर्ण बैठक में भी हिस्सा लिया।

औराद में ५ तपस्वी भूमिपुत्रों का सम्मान समारोह

जिन पांच तपोनिष्ठ महात्माओं ने महान कार्यों से अपनी जन्मस्थली ग्राम औराद(तहसील-उमरगा, जि.धाराशिव) का नाम राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पहुंचाया, ऐसे पांच कर्मठ महामना व्यक्तित्त्व सर्वश्री १०६ वर्षीय आर्यसंन्यासी स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चन्द्र गुरुजी), पूज्य डॉ.ब्रह्ममुनिजी, वैद्य विज्ञानमुनिजी का भव्य अभिनन्दन समारोह दि.२६ फरवरी २०२३ को उत्साह से सम्पन्न हुआ। साथ ही पूज्य स्व.आचार्य श्री शिवमुनिजी, वैदिक विद्वान् स्व.पं.विश्वमित्रजी शास्त्री (हिसार-हरियाणा) इन दोनों का मरणोपरान्त गौरव भी किया गया, जिसे शिवमुनिजी की धर्मपत्नी श्रीमती मंगलादेवी मयाचारी तथा पं.विश्वमित्रजी के भाई श्री डॉ.रामचन्द्रजी शास्त्री ने ग्रहण किया। इस समारोह में प्रमुख अतिथि के रुप में पूर्व केन्द्रीय राज्यमन्त्री श्री जयसिंगराव गायकवाड पाटील उपस्थित रहे तथा समारोह की अध्यक्षता वैदिक विद्वान आचार्य श्री वेदकुमारजी वेदालंकार ने की। समारोह से पूर्व पं.राजवीर जी शास्त्री के ब्रह्मत्त्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ और गौरवमुर्ति महात्माओं की औराद ग्राम में शोभायात्रा निकाली गयी। इस समारोह में आर्यजन तथा स्नेही शिष्यगण दूर-दूर से पधारे थे।

(विस्तृत समाचार मराठी विभाग में ३१ पृष्ठ पर)

-* आर्य विदुषी नारी का राष्ट्रीय गौरव *-

आचार्या डॉ.सुकामा को 'पद्मश्री' सम्मान

आर्यजगत् के लिए गौरव का विषय है कि विगत ४० वर्षो से कन्याओं को गुरुकुलीय शिक्षा व संस्कार प्रदान करने हेतु अपना समग्र जीवन व्यतीत करनेवाली वैदिक विदुषी आचार्या डॉ.सुकामा शास्त्री को भारत सरकारद्वारा **'पद्मश्री'** पुरस्कार मिला है। गत ५ अप्रैल २०२३ को राष्ट्रपति भवन में सम्पन्न हुए पद्मपुरस्कार वितरण समारोह में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी ने उन्हें पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किया। डॉ.सुकामाजी ने महिला सशक्तिकरण व शिक्षा में अपना महनीय योगदान दिया है। अपनी गुरुकुलीय शिक्षा (आरम्भ से शास्त्री, आचार्य, पीएच.डी.तक) पूरी करने के बाद उन्होंने अपनी सखी आचार्या डॉ.सुमेधाजी के साथ मिलकर सन् १९८८ में चोटीपुरा (अमरोहा-उ.प्र.) में आर्ष कन्या गुरुकुल की स्थापना की। इस संस्था के माध्यम से अनेकों कन्याओं को संस्कृत, व्याकरण, वेद, दर्शन आदि विषयों की शिक्षा दिलाई। उन्होंने वैदिक ज्ञान प्रसारक्षेत्र में कन्याओं को उच्च विद्या विभूषित कर उन्हें सर्वदृष्टि से सशक्त बनाने में अहम् भूमिका निभाई। बाद में सन् २०१८ से डॉ.सुकामा जी ने हरियाणा राज्य के रुडकी (रोहतक) में नया **'विश्ववारा आर्ष कन्या गुरुकुल'** खोला और अपना पूरा जीवन कन्याओं के निर्माण में लगाया। कन्या गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली हेतु अपना सर्वस्व अर्पण करनेवाली ऐसी वेदविदुषी नारी को 'पद्मश्री' पुरस्कार मिलने से आर्य जगत् में आनन्द की लहर छा गयी है। इस उपलक्ष्य में आचार्या डॉ.सुकामाजी का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनायें!

शोक समाचार

डॉ.वेदप्रताप वैदिक नहीं रहे

प्रसिद्ध वरिष्ठ पत्रकार एवं वैदिक विचारों के अनुगामी डॉ.श्री वेदप्रतापजी वैदिक का दि.१४ मार्च २०२३ को प्रातः हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। उनकी आयु ७८ वर्ष की थी। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रिय घटनाचक्रों एवं राजनैतिक व सामाजिक विषयों पर निर्भीकता के साथ लेखनी चलानेवाले श्री वैदिकजी का भारतीय जनमानस के जागरण में योगदान रहा है। देश-विदेश की शीर्षस्थ हिन्दी व अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं में आजतक आपके हजारों लेख छप चुके हैं।

म.दयानन्द, महात्मा गांधी और डॉ.राममनोहर लोहिया की विचार परम्परा को आगे बढाने में आप सक्रिय रहे। राष्ट्रभाषा हिन्दी को मौलिक चिन्तन की भाषा बनाने के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं का सम्मान बढाने में आपने सदैव संघर्ष किया है। इन्दौर के आर्य परिवार में जन्में श्री वैदिकजी ने पिछले ६० वर्षों में भारतीय पत्रकारिता क्षेत्र को समुचित सम्मान बढाया है। अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में आपने भारत का प्रतिनिधित्व किया है। ऐसे यशस्वी पत्रकार एवं राष्ट्रीय कार्यों में महनीय योगदान देनेवाले व्यक्तित्त्व के असमय में ही चले जाने से देश के पत्रकारिता व सामाजिक क्षेत्र की क्षति हुई है। उनके पार्थिव पर वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये गये।

पुणे के कर्मठ कार्यकर्त्ता नागपालजी का निधन

आर्य समाज नानापेठ पुणे के वरिष्ठ मार्गदर्शक व संरक्षक सदस्य तथा प्रसिद्ध निवृत्त मुख्य आयकर आयुक्त श्री सुभाषचन्द्रजी नागपाल का २२ जनवरी २०२३ को रात्रि में हृदयगति रुक जाने से दुःखद निधन हुआ। वे ८३ वर्ष के थे। उनके पश्चात् परिवार में पत्नी, दो पुत्र एवं एक कन्या विद्यमान हैं। श्री नागपालजी इन्कमटैक्स विभाग के कर्तव्यदक्ष, प्रामाणिक, अनुशासनप्रिय वरिष्ठ अधिकारी रह चुके हैं। आर्य समाज नानापेठ पुणे की प्रगति में उनका काफी योगदान रहा है। अपूर्व उत्साह के प्रतीक रहे श्री नागपालजी आर्य कार्यकर्त्ताओं को सदैव

प्रोत्साहित किया करते थे। कार्यक्रमों का सम्यक् नियोजन, कुशल संयोजन व आधुनिक दृष्टि से आर्य समाज का उन्नयन आदि बातों में सदैव अग्रणि रहे। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के वे अन्तरंग सदस्य भी रहे। उनके पार्थिव पर दूसरे दिन पं.श्री ऋषि आर्य के पौरोहित्य में वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये गये। वैदिक विद्वान् डॉ.वागीशजी आचार्य के ब्रह्मत्व में परिवार में शान्तियज्ञ भी सम्पन्न हुआ।

सौ.प्रतिभादेवी वेदालंकार का देहावसान

वैदिक विचारों की अनुगामिनी तथा आर्य समाज धाराशिव (उस्मानाबाद) की ज्येष्ठा सदस्या सौ.प्रतिभादेवी वेदालंकार का गत दि.२८ मार्च २०२३ को प्रातः १० बजे उदगीर में हृदयगति रूक जाने से निधन हुआ। वे ८७ वर्ष की थी। आर्यजगत् के जानेमाने विद्वान् लेखक तथा अनुवादक (निवृत्त प्राचार्य) श्री वेदकुमारजी वेदालंकार की आप सहधर्मचारिणी थी। हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के क्रान्तिकारी आर्यनेता (दिवंगत) श्री शेषराव वाघमारेजी-निलंगा (पू.आनन्दमुनिजी) की द्वितीया कन्या होने का सौभाग्य भी आपको प्राप्त हुआ। पतिदेव श्री वेदमुनिजी का आपने जीवनभर निष्ठापूर्वक साथ दिया। उनके अध्यापन, प्रशासन, वेदप्रचार,वैदिक साहित्य-लेखन, अनुवाद तथा अनुसन्धानादि कार्यों में प्रतिभाजी पूरी श्रद्धा के साथ जुटी रही। स्वभाव से शान्त, सौम्य, सरल, मिलसार व मितभाषी व्यक्तित्त्व की मूर्ति रही माताजी लातूर के विशेष समारोह में अपने पतिदेव के साथ ही वानप्रस्थकी दीक्षा ली थी। हरिद्वार, आलन्दी, उमरगा आदि स्थानों पर रहते हुए आप स्वाध्याय, चिन्तनादि कार्यों में व्यग्र रही। लगभग १०-१२ वर्षों से उमरगा शहर के समीपस्थ इन्द्रधनु वृद्धसेवा आश्रम में आप दोनों निवास करते रहे। आर्य समाज के कार्यक्रमों में आप अपने मधुर कष्ठ से भजन भी सुनाया करती थी।

माताजी के पश्चात् सुपुत्र श्री सुमंत, बहू सौ.मनीषा, कन्या प्रा.सौ.अदिति, दामाद श्री राजेश भुसारी, पौत्र-दौहित्रादि परिवार है। उनके पार्थिव पर दूसरे दिन ११ बजे धाराशिव में वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये गये। स्थानीय आर्य समाज के मन्त्री विजयकुमार बंग एवं डॉ.विनोदकुमार वेदार्य ने यह संस्कार सम्पन्न कराया। इस अवसर पर सभा मन्त्री श्री राजेन्द्रजी दिवे एवं अन्य आर्यजन उपस्थित थे।

आचार्य विद्यादेवजी का निधन

गुरुकुलीय शिक्षापद्धति के संवाहक, वेद-व्याकरण व संस्कृत के ज्ञाता तथा वैदिक धर्मपचारक श्री आचार्य विद्यादेवजी(आयु ७१) का ९ अप्रैल की मध्यरात्रि में हृदयाघात से दुःखद निधन हुआ। कुछ वर्षों से वे बीमार थे। उनपर ग्रेटर नौएडा के जेम्स अस्पताल में इलाज चल रहे थे। आचार्य जी के देहावसान से गुरुकुलीय स्नातक मंडली में शोक छा गया है।

आधुनिक शिक्षा (बी.एस्सी.) कर जब विद्यादेवजी दिल्ली में सरकारी नौकरी करने लगे, तब उन्हें अपने मित्रों द्वारा आर्य समाज व वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी मिली। इसके बाद उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र देकर और परिवारवालों से आज्ञा लेकर संस्कृत व व्याकरण पढने हेतु आर्य गुरुकुल एटा(उ.प्र.) पहुंचे। वहां पर आपने लगन से वेद, व्याकरण, दर्शन तथा अन्य शास्त्रों का अध्ययन किया। व्याकरणाचार्य बनकर उन्होंने अपना सारा जीवन गुरुकुलीय शिक्षा प्रसार व वेदधर्म के प्रचार हेतु समर्पित किया। गुरुकुल एटा में अध्यापन के साथ ही व्यवस्थापन का उत्तरदायित्व सम्भाला। तत्पश्चात् स्वामी प्रणवानन्दजी के आग्रह पर आपने श्रीमद्दयानंद वेद विद्यालय(गुरुकुल, गौतमनगर) नई दिल्ली में व्याकरणाचार्य के रुप में अध्यापन का कार्य किया। तत्पश्चात् ऋषि जन्मस्थली टंकारा आये। यहां पर लगभग १७ वर्षों तक आपने म.दयानंद उपदेशक महाविद्यालय के प्रधानाचार्य के रुप में कार्य किया। आपके आचार्यत्व में यह उपदेशक विद्यालय प्रगति के शिखर पर पहुंच गया है। बाद में ११ वर्षों तक आपने वैदिक विद्वान के रूप में भारतवर्ष के विविध स्थानों पर व विदेशों में भी जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। पांच वर्ष पूर्व महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा ने आपको श्रावणी वेदप्रचार हेतु एक माह के लिए आमन्त्रित किया था। उस समय आपके छ.संभाजी नगर, परली, लातूर, सोलापूर आदि स्थानों पर १-१ सप्ताह भर तक कार्यक्रम आयोजित हुए। श्री आचार्यजी को विभिन्न संस्थानों द्वारा पुरस्कार प्रदान कर गौरवान्वित किया गया है। ऐसे मितभाषी, शान्त, गम्भीर, सरल स्वभावी व्यक्तित्त्व के धनी व कर्मठ वैदिक धर्मप्रचारक के चले जाने से आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति हूई है।

उपरोक्त सभी दिवंगत आत्माओं को शान्ति व सद्‌गति हेतु प्रार्थना!
उन्हें भावपूर्ण श्रद्धाजन्लियाँ व शोकसंतप्त परिवारों के प्रति संवेदनाएं..!

(सम्पादकीय का शेष भाग...)

में भी आज पौराणिक हिंदुत्ववाद अधिक उभर रहा है, तो दूसरी ओर इस्लामिक कट्टरतावाद भी उग्र रूप धारण कर रहा है। मनुष्यता का क्या होगा? इसमें त्रस्त है तो केवल सामान्य जनता ! समाज व राष्ट्र में शांति सुरक्षा व एकात्मता स्थापित हो, इसकी किसी को चिंता नहीं है। इनका अधिकाधिक लाभ तो राजनीतिक पार्टियां भी ले रही हैं । चुनावों में अपना वोट बैंक पक्का करने के लिए वे न जाने किस स्तर पर पहुंचेंगे, इसका पता नहीं। राष्ट्रवाद के नाम पर केवल किसी एक संप्रदाय का पक्ष लेना,यह देश के व्यापक हित में नहीं है और धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देकर किसी एक मजहब को महत्व देना व असमानता का व्यवहार करना भी अनर्थकारी है । देश में रहनेवाला हर एक नागरिक ,चाहे वह किसी भी पंथ या जाति का भी क्यों न हो, सभी ने एक दूसरे से आत्मीयता-पूर्वक स्नेह पूर्ण, न्यायोचित और समानता का व्यवहार करना यही तो मानवता है। नेताओं के लिए तो यह जनता जनार्दन होती है। उनके साथ पुत्रवत् व्यवहार की परंपरा रघुकुल से चली आ रही है, तब वर्तमान राजनीति करनेवालों को क्या रामादि रघुवंशीय राजाओं का क्योंकर स्मरण नहीं होता ? मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का उज्ज्वल चरित्र हमारे सम्मुख होते हुए भी हम उनकी मानवीयता से भरे आदर्शों को जो समझ नहीं पा रहे हैं ? राम तो विश्व के अभिराम हैं, तब सबके प्रति मानवता का सुमधुर व्यवहार होने से ही सच्ची रामभक्ति व राष्ट्रसेवा सिद्ध हो सकेगी।

उन्नीसवीं शताब्दी के सुधारकशिरोमणि महर्षि दयानंद ने बिना किसी पक्षपात के वेदज्ञान एवं सृष्टिविज्ञान की कसौटी पर अपने सारे ग्रंथों में केवल मानवता को ही प्रतिपादित किया है । एतद्देशीय पौराणिक हिंदू हो या विदेशी इस्लामिक, ईसाई अथवा जैन, बौद्ध इन सभी मतों मे वर्णित वैदिक असत्य मान्यताओं का खंडन वे बड़ी निर्भीकता के साथ करते हैं और उनमें विद्यमान सत्य सिद्धांतों को भी स्वीकारते भी हैं। सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में वे सभी मतों के विद्वानों को आवाहन करते हुए कहते हैं- 'यदि ये विद्वान पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धांत अर्थात जो जो बातें सब के अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध है, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें, वर्तावे तो जगत का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से विद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुख की वृद्धि और सुख की हानि होती है । इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्य को प्रिय है, सब मनुष्य को दुःखसागर में डुबो दिया है।'

***** - डॉ.नयनकुमार आचार्य**

।।ओ३म्।।

माझा मराठीची बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें। मेळवीन।। (संत ज्ञानेश्वर)

* मराठी विभाग *

* महर्षी मनुंचा उपदेश *

ब्राह्मण शरीर कशामुळे ?

स्वाध्यायेन जपैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः।। (मनुस्मृती-२/२८)

अर्थ – आपले शरीर हे (स्वाध्यायेन) अध्ययन-अध्यापन, (जपैः) विचार करणे व करविणे, (होमैः) नानाविध होमांची अनुष्ठाने,(त्रैविद्येन) संपूर्ण वेदांचे शब्द, अर्थ, संबंध, स्वरोच्चारण यांसह शिकणे-शिकविणे (इज्जया) पौर्णमासी, इष्टी वगैरे करणे पूर्वी सांगितल्याप्रमाणे विधिपूर्वक, (सुतैः) धर्माने प्रजोत्पादन करणे, (महायज्ञैश्च) ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, वैश्वदेवयज्ञ आणि अतिथियज्ञ, (यज्ञैश्चः) अग्निष्टोमादी यज्ञ, विद्वानांचा सत्संग, सत्कार, सत्यभाषण, परोपकारादी सत्कर्मे करणे, संपूर्ण शिल्पविद्यादी शिकणे, दुराचार सोडून सदाचार धारण करणे, या आचारांच्या योगाने(इयं तनुः) हे शरीर (ब्राह्मी) ब्राह्मण वर्णाचे (क्रियते) केले जाते.

* दयानंद वाणी *

राजपुरुष अधिक दंडणीय

ज्या अपराधाबद्दल सामान्य माणसाला एक पैसा दंड होतो, त्याच अपराधाबद्दल राजाला हजार पैसे दंड केला जावा, याचा अर्थ असा की सामान्य माणसाच्या हजार पट शिक्षा राजाला झाली पाहिजे. मंत्री किंवा दिवाण यांना आठशे पट, त्याहून खालच्या पातळीवरील व्यक्तींना सातशे पट, त्याहून खालच्या दर्जाच्या लोकांना सहाशे पट, याप्रमाणे ज्याची जी योग्यता असेल तिच्याप्रमाणे त्याला कमी किंवा जास्त शिक्षा करण्यात यावी. सर्वात खालचा कर्मचारी म्हणजे पट्टेवाला होय. त्याला सामान्य माणसापेक्षा किमान आठपट शिक्षा झाली पाहिजे. याचे कारण असे की सामान्य प्रजाजनापेक्षा राजपुरुषाला म्हणजे सरकारी नोकराला जास्त शिक्षा झाली नाही तर हे राजपुरुष प्रजाजनांचा नाश करून टाकतील.

राम म्हणता रामची होईजे..!

- लक्ष्मण आर्य गुरुजी

आर्यसम्राट, मर्यादापुरुषोत्तम, आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श बंधू, आदर्श मित्र अशा कितीतरी विशेषणांनी नटलेले नाव म्हणजे भगवान श्रीरामचंद्र! जेंव्हा महर्षी वाल्मिकींनी महर्षी नारदांना आदर्श चरित्र लेखनासाठी नाव विचारले, तेंव्हा नारदांनी मर्यादा पुरुषोत्तमाचे नाव सांगितले. यावरुन श्रीरामाचे चरित्र किती महान होते? हे दिसून येते.

श्रीरामांच्या चरित्राचा मागोवा घेतल्यास अनेक पैलूंचा उलगडा होतो. राजा दशरथाला पुत्रकामेष्टी यज्ञानंतर पुत्रप्राप्ती झाली. त्यात थोरला राम! लहानपणीच राम 'आकाशातील चंद्र मला खेळायला हवा!' असा हट्ट करीत असत. माता कौशल्येने आरशाच्या मदतीने तो हट्ट पुरविला. 'लहानपणी बाळाचे पाय पाळण्यात दिसतात!' या उक्तीचा प्रत्यय आला. मोठ्यांचे खेळही मोठेच.

मुले गुरुंकडून विद्यापारंगत झाले. लहानपणीच वेद-वेदांग, धुनर्विद्या प्राप्त केल्या. ते शूर, ज्ञानी, विनयशील, सदाचारी बनले. ते मातृपितृ भक्त होते. चौघा भावांमध्ये एकमेकांत गाढ प्रेम होते. अयोध्येत आनंदी आनंद होता. माता-पिता खूप आनंदी होते.

एके दिवशी राजा दशरथ, गुरु वशिष्ट व इतर मंत्रीगण राज्यासंबंधी विचारविनिमय करीत बसले होते. त्यावेळी ऋषि विश्वामित्र आल्याची वार्ता समजली. लागलीच म.वशिष्ट व राजा दशरथांनी विश्वामित्रांचे स्वागत केले. क्षेमकुशल झाल्यानंतर विश्वामित्रांनी यज्ञ रक्षणासाठी रामाची मागणी केली. दशरथाची इच्छा

नसतांनाही वशिष्ठांच्या परामर्शानंतर ती मान्य केली.

विश्वामित्रांसमवेत राम-लक्ष्मण गेले. त्यांनी ताटिका, सुबाहू राक्षसांचा नायनाट केला व यज्ञाचे रक्षण केले. प्रसन्न होऊन विश्वामित्रांनी त्यांना अनेक शस्त्रास्त्रे भेट दिली. यावरुन प्राणाची बाजी लावून यज्ञ धर्माचे रक्षण करणे, हे राम-लक्ष्मणांनी परमश्रेष्ठ कर्तव्य केल्याचे दिसून येते.

विश्वामित्र राम-लक्ष्मणासह मिथिलेस जातात. जातांना पतित अहल्येचे तपःपूत स्वरुप पाहून तिचे दर्शन घेतात. तेवढ्यात गौतम ऋषी येतात व तपः पूत अहल्येचा स्वीकार करतात. हा खरा अहल्येचा उद्धार होय.

मिथिलेत गेल्यावर श्रीराम शिवधनुष्याचा भंग करून सीता स्वयंवर जिंकतात. हे रामांच्या अफाट सामर्थ्याचे दर्शन होय. चौघा भावांच्या विवाहानंतर अयोध्येला परततांना परशुराम क्रोधान्वित होऊन आडवे येतात. तेंव्हा त्यांचेही गर्वहरण राम करतात. राजा दशरथ आपला गुणसंपन्न मुलगा पाहून नेहमीच आनंदी असतात. राम अनेक गुणांनी संपन्न होते, हे खालील श्लोकावरून लक्षात येते.(अयोध्याकाण्ड १/२०, २२)

सम्यग् विद्याव्रतस्नातो यथावत्साङ्गवेदवित्।
इष्वस्त्रे च पितुः श्रेष्ठो बभूव भरताग्रजः।।
धर्मकामार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान प्रतिभानवान्।
लौकिके समयाचारे कृतकल्पो विशारदः।।

अशा गुणसंपन्न मुलाचा राज्याभिषेक करावा, ही दशरथाची इच्छा! ही पावन इच्छा त्यांनी मंत्रिसभेत जाहीर केली. सर्वांच्या सानंद अनुमोदनानंतर राज्याभिषेकाची तयार सुरु झाली. सारी अयोध्या नगरी आनंदाने पुलकित झाली होती. परंतु कैकयीच्या हट्टापायी या कार्यात रंगभंग झाला.रामाला वनवास व भरताचा राज्याभिषेक ठरला. राजा दशरथ मूर्च्छित होते. काही बोलत नव्हते. हे पाहून माता कैकयीस रामाने कारण विचारले, तेंव्हा कैकयीने सर्व हकीकत सांगितली. तेंव्हा राम म्हणतात, ''पित्याच्या वचनासाठी मी अग्नीत उडी घेईन, हलाहल विष घेईन, समुद्रात उडी घेईन.'' केवढी ही पितृभक्ति...!

कैकयीने मागितलेले वर सांगितल्यावर 'न विव्यथे रामः!' श्रीराम किंचित देखील दुःखी झाले नाहीत.(महानाटक ३/२२)

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनायं च।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः।।

राज्याभिषेकाच्या वार्तेने राम फार आनंदी नव्हते आणि वनवासाच्या

बातमीने ते दुःखी नव्हते. केवढी ही रामाची स्थितप्रज्ञावस्था!(अयो.२१/४१)

धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्।
धर्मसंश्रितमेतच्च पितुर्वचनमुत्तमम्।।

जगात धर्म सर्वश्रेष्ठ आहे. धर्मातच सत्य प्रतिष्ठित आहे. धर्मानुकुल पित्राज्ञा आहे. तिचे पालन करणे हाच माझा धर्म. केवढी अढळ धर्म व पित्याच्या आज्ञेवर श्रद्धा..!

नको म्हणत असतानाही राम हे लक्ष्मण व सीता वनाला जाण्यासाठी तयार होतात. राम सीतेला वनवासाचे काठिण्य सांगतात. तेंव्हा ती म्हणते -

न पिता नात्मजो न आत्मा न माता न सखीजनः।
इह प्रेत्य च नारीणां पतिरेको गतिः सदा।।

(अयौ सर्ग २७/५)

स्वर्गेऽपि च विना वासो भविता यदि राघव।
त्वया मम नरव्याघ्र नाहं तमपि रोचये।।२०।।

स्त्रीला इह-परलोकात पतिच सर्व काही आहे. हे नरश्रेष्ठाला सुमित्रा सांगते - (अयो.४०/९)

रामं दशरथं विद्धि मां विद्धि जनकात्मजाम्।
अयोध्यामटवीं विद्धि गच्छ तात यथासुखम्।।

हे वत्सा! तू श्रीरामाला पित्यासमान, सीतेला मातेसमान आणि वनाला अयोध्येसमान समज आणि सुखाने जा! धन्य ती माता सुमित्रा! पुढे जाताना गुह नावाच्या निषादराजाशी त्यांची भेट होते. त्याला श्रीराम आलिंगन देतात, त्याने आणलेल्या भेटवस्तूंचा सविनय अस्वीकार करतात व त्यांच्या नावेने नदी पार करतात.

पुढे चित्रकुट पर्वतावर मुक्काम पडतो. राजा दशरथाची अंतेष्टी करून भरत रामाला परत आणण्यासाठी चित्रकुट पर्वतावर येतो. रामाला तो विनवणी करतो की, 'हे भ्राता रामा! राज्य आपले आहे, आपण परत चला.' परंतु श्रीराम त्याला अनेक प्रकारे समजावतात. पहा! केवढा हा त्याग व केवढे हे प्रेम! त्यांच्या जीवनात 'इंद न मम' (हे माझे नाही.) ही भावना होती. त्यामुळे 'रामायण' हा आदर्श आचरणीय ग्रंथ आहे. शेवटी भरत नाईलाजाने परत निघतो. परंतु म्हणतो- 'मी आपल्या खडावा(पादुका) सिंहासनावर ठेवून, जटा धारण करून आणि फळ-मूळ खाऊन संन्यस्त वृत्तीने राहीन व आपल्या भेटीची प्रतीक्षा करीन. चौदा वर्ष झाल्यावर आपण आला नाहीत तर अग्नीत प्रवेश करीन.' केवढे हे बंधुप्रेम..!

पुढे अनेक आश्रमांना भेटी देत, अनेक राक्षसांचा निःपात करीत ते पंचवटीला जातात. तिथे जटायुशी सख्य होते. शबरींची भेट होते. भक्ती पाहून

फलाहार घेतात. काही काळानंतर सीतेचे अपहरण होते. तिच्या शोधार्थ ते किष्किंधेस येतात. तिथे हनुमान, सुग्रीव इ. ची भेट होते व त्यांची मैत्री होते. राम व हनुमान यांचा संवाद होतो. राम लक्ष्मणाला म्हणतात- 'हनुमान वेदज्ञ आहे.' यावरुन हनुमान वानर नव्हते, तर ते विद्वान मनुष्य होते, हे सिद्ध होते. मैत्री झाल्यानंतर सीतेचा शोध घेण्याची प्रतिज्ञा करतात. सीता हरणाचा उल्लेख झाल्यावर सुग्रीव वस्त्रात बांधलेले दागिने रामास दाखवितो. तेंव्हा राम विलाप करतात व दागिने ओळखण्यासाठी लक्ष्मणाकडे देतात. ते पाहून लक्ष्मण म्हणतो- (कि.६/२२)

नाहं जानामि केयुरे नाहं जानामि कुण्डले।
नुपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्।

पुढे वालीचा वध करण्यासाठी राम बाण मारतात.तेंव्हा बाली म्हणतो की, 'हे रामा! मला विनकारण का मारतोस?' राम म्हणतात,- 'जो कामासक्त मानव आपल्या लहान भावाच्या पत्नीस आपली पत्नी समजतो. त्याला मृत्युदंडच योग्य आहे. बालीवधानंतर किष्किंधेचे राज्य सुग्रीवाला देऊन बालीपुत्र अंगदाला युवराज बनवतात. सीतेचा शोध घेण्यासाठी अंगद, हनुमान इ. वानरसेना जाते. हनुमान सीतेचा शोध लावतात व रामांना ही वार्ता सांगतात. श्रीराम वानरसेनेसह लंकेकडे प्रस्थान करतात. नल, नील इ. स्थापत्य तज्ञांच्या मदतीने समुद्रावर सेतू बांधून लंकेत ते प्रवेश करतात. एकट्या रावणाने अपराध केला. सर्वांना संहारणे योग्य नाही, म्हणून अंगदाला शिष्टाई करण्यासाठी ते रावणाकडे पाठवतात. परंतू त्याचा कांहीच उपयोग होत नाही. तेंव्हा शेवटी युद्धाला प्रारंभ होतो. यात अनेक योद्धे मारले जातात. रावणाचा राग बिभीषणावर जास्त असतो. कारण तो शत्रूपक्षाला जाऊन मिळालेला असतो. रावण बिभीषणावर जेंव्हा दुर्धर शक्ती सोडतो, तेंव्हा शरणगताचे रक्षण करण्यासाठी लक्ष्मण मध्ये येतो व ती शक्ती स्वतःवर घेतो व मूर्च्छित पडतो. आपल्या प्राणाची पर्वा न करता शरणागताचे रक्षण करणे हे लक्ष्मणाने आपले कर्तव्य समजले. केवढे हे दिव्यत्व! मूर्च्छित झालेला लक्ष्मण पाहून राम शोक करतात व म्हणतात- 'लक्ष्मण गेला, तर मी सुद्धा प्राण त्याग करीन. केवढे हे बंधुप्रेम..! लक्ष्मण सावध झाल्यानंतर घोर युद्ध होते. राम रावणाचा वध करतात. रावणाचा देह जमीनीवर कोसळल्याचे पाहून बिभीषण

दुःख व्यक्त करतो.तेंव्हा श्रीराम त्यांना समजावतांना म्हणतात – 'रावण युद्धात वीरगतीला प्राप्त झाला आहे. त्यामुळे शोक करणे योग्य नाही.' अंत्याष्टीचा आदेश देताना राम म्हणतात.

मरणान्तानि वैराणि निवृत्तं नः प्रयोजनम्।
क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव।।

(यु.११२/२६)

'जीवंत असेपर्यंतच वैर होते आणि आमचे प्रयोजन आता सिद्ध झाले. जसा तुमचा भाऊ आहे, तसा माझाही! म्हणून आता याचा यथोचित संस्कार करावा.' किती हा उच्च आणि महान आदर्श! अंत्येष्टीनंतर बिभीषणाचा राज्याभिषेक केला जातो. नंतर पवित्र सीतेला बरोबर घेतले. आता त्यांना भरतभेटीची, मातांची व जन्मभूमीची ओढ लागली होती.

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी' जननी व जन्मभूमी स्वर्गापेक्षाही थोर मानणारे श्रीराम किती थोर होते हे सांगणे न लगे. राम परत अयोध्येला आल्यानंतर भरताने त्यांना राज्य सोपविले. त्यांचा विधिवत राज्याभिषेक झाला. त्यांनी यशस्वीपणे राज्य केले.

'झाले रामराज्य काय उणे आम्हासी।
धरणी धरी पिके गायी ओळल्या म्हशी।।'

रामराज्याचे वर्णन म.वाल्मीकीने सुंदर शब्दात केले आहे. श्रीरामाच्या राज्यात, रोगराई नव्हती. विधवा स्त्रिया नव्हत्या. चोर, डाकू नव्हते. बालमृत्यू होत नसे. आपापल्या वर्णानुसार धर्मकृत्य, अनुष्ठान करण्याने लोक प्रसन्न होते. यथासमयी वर्षा होत असे. कोणीही लोभी नव्हते. सर्वजण सद्गुणसंपन्न होते. धर्मपरायण होते. असे होते रामराज्य! असे राज्य कोणाला नको वाटेल बरे?

श्रीराम हे वैदिक संस्कारांनी परिपूर्ण असे आदर्श व्यक्तिमत्त्व होते. ते आदर्श पुत्र, आदर्श शिष्य, आदर्श बंधू, आदर्श पती, आदर्श स्वामी, आदर्श मित्र, एवऐच नव्हे तर आदर्श शत्रू ही होते. असा आदर्शाचा पुतळा म्हणजे श्रीराम! आजकाल आम्ही केवळ त्यांच्या चित्रांची, मूर्तीची पूजा करतो, पण राम हे मात्र सध्या कोणाच्याही अंगात(जीवनात) येत नाहीत, हे दुर्दैव. चित्रांच्या पूजेपेक्षा चरित्राची पूजा करावी, हीच खरी पूजा! त्यांचे सद्गुण सर्वांनी अंगी बाणावेत, हीच अपेक्षा..! थोडक्यात असे म्हणता येईल–**'राम म्हणता राम** [illegible] !'

– 'पंचप्रका[illegible], परळी–वै.
२०२६९९२४

औरादेत पंचरत्न भूमिपुत्रांचा गौरव समारंभ

म.दयानंदांनी वैदिक क्रांतीचे रणशिंग फुंकले !

- माजी केंद्रीय मंत्री जयसिंगराव गायकवाड पाटील

एकोणिसाव्या शतकात मोठ्या प्रमाणात वाढत चाललेल्या अज्ञान व अविद्येच्या काळोखात युगप्रवर्तक महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वतींनी वेदज्ञानाची मशाल पेटवून सारा आसमंत उजळून काढला व वैदिक क्रांतीचे रणशिंग फुंकले. याच वेदज्ञानाच्या प्रकाशामुळे बहुजनांना व महिलांना ज्ञानाचा अधिकार प्राप्त झाला्. महर्षी दयानंदांनी स्थापन केलेल्या आर्य समाजाच्य प्रसार व प्रचार करण्याकरिता आयुष्य वेचलेल्या पाच पुण्यवंत गौरवमूर्ती भूमिपुत्रांच्या जन्मामुळे औराद हे गाव खरोखर धन्य झाले आहे, या गावची पवित्र माती कपाळी लावण्याचे भाग्य मला लाभले,अशा त्यागी व समर्पित सत्पुरुषांना परमेश्वर उत्तम आरोग्य व शतायुष्य प्रदान करो, असे प्रशंसोद्गार माजी केंद्रीय मंत्री जयसिंगराव गायकवाड पाटील यांनी काढले. मानवतेचा प्रसार, आर्य समाज प्रचार व सामाजिक कार्यात मोलाची भूमिका बजावणारे १०५ वर्षीय स्वामी श्रद्धानंदजी (हरिश्चंद्र गुरुजी), निवृत्त प्राध्यापक व महाराष्ट्र सभेचा काळापालट करणारे पूज्य डॉ. ब्रह्ममुनीजी (सु.ब काळे), संस्कृत व गुरुकुलीय शिक्षणासाठी योगदान देणारे दिवंगत पूज्य शिवमुनीजी उर्फ शं. भी.मयाचारी गुरुजी निसर्गोपचार व आयुर्वेदाच्या प्रचार कार्यात मोलाचे योगदान देणारे वैद्य श्री विज्ञानमुनीजी (अण्णाराव पाटील) आणि हरियाणा प्रांतात वैदिक धर्माचा प्रचार केलेले दिवंगत वैदिक विद्वान स्व.पं. विश्वामित्रजी शास्त्री या पाच भूमिपुत्रांचा दिन.२६ मार्च रोजी औराद (ता. उमरगा जि. धाराशिव) या गावी भव्य असा जाहीर गौरव समारंभ संपन्न झाला. यावेळी प्रमुख पाहुणे म्हणून श्री गायकवाड बोलत होते.

कार्यक्रमाचे अध्यक्षस्थानी निवृत्त प्राचार्य व आर्य लेखक, अनुवादक

श्री वेदमुनीजी वेदालंकार हे उपस्थित होते.यावेळी व्यासपीठावर सर्वश्री पूज्य सोममुनीजी,महाराष्ट्र सभेचे प्रधान श्री योगमुनीजी, मंत्री राजेंद्रजी दिवे, आर्य वैज्ञानिक डॉ. बी. एम म्हेत्रे, वैदिक विद्वान पं. राजवीरजी शास्त्री आदी मान्यवर उपस्थित होते. आपल्या अभ्यासपूर्ण भाषणात श्री गायकवाड म्हणाले हर्षदा आनंदाने प्रतिकूल व्यवस्थेत वेदांची तत्त्वज्ञान जगासमोर मांडले स्वामीजींनी सर्व जाती, पंथ (धर्म) व वर्गांना एक करून जात-पात व पंथ विरहित मानव समाज म्हणजेच आर्य समाज स्थापन केला. पुण्यानंतर आमच्या धारूर गावात आर्य समाजाची दुसरी शाखा स्थापन झाली या आर्य समाजाच्या सत्संगामुळे माझ्यावर वैदिक धर्माचे व मानवतेचे संस्कार जडले त्यामुळेच राजकारणासारख्या देखील मी निष्कलंक व्यक्तिमत्व म्हणून वावरतो आहे याचे सर्व श्रेय आर्य समाजाला जाते. महर्षी दयानंद जन्माला आले नसते, तर आपण हजारो वर्ष मागे लोपला असता. पण ईश्वराची फार मोठी कृपा झाली अन् आम्हांस दयानंद सरस्वती सारखे महान वेदज्ञ युगपुरुष लाभले. महर्षींच्या या मानव कल्याणकारी विचारांनाऔराद गावातील या पाच महापुरुषांनी वाहून घेतले व एक नवा इतिहास घडविला. या थोर सत्पुरुषांच्या आदर्श कार्यांपासून नव्या पिढीने प्रेरणा घेत त्यांचे कार्य पुढे नेणे गरजेचे आहे. असे ते म्हणाले.

याप्रसंगी गौरवमूर्ती पूज्य स्वामी श्रद्धानंदजी, डॉ. ब्रह्ममुनिजी, वैद्य विज्ञानमुनीजी, तर दिवंगत शिवमुनीजी यांच्या धर्मपत्नी श्रीमती मंगलादेवी मयाचारी, दिवंगत पं. विश्वमित्र यांचे बंधू रामचंद्रजी पाटील शास्त्री यांचा शाल, स्मृतिचिन्ह, गौरवपत्र प्रदान करून सत्कार करण्यात आला. गौरव पत्रांचे वाचन सर्वश्री प्रा. डॉ. नरेंद्र शिंदे , शिवराज पाटील प्रा. डॉ. अरुण चव्हाण व आचार्य अविनाश यांनी केले.वरील तिन्ही गौरव मूर्तींनी सत्काराला उत्तर देतांना गावकऱ्यांच्या या हृद्य प्रेमाबद्दल कृतज्ञता व्यक्त करून यापुढे गावात आर्य समाज व कार्य विचार वाढीस लागावे, अशी अपेक्षा व्यक्त केली.शिवमुनीजींच्या वतीने त्यांच्या कन्या सौ. इंदुमती सुतार यांनी तर पं. विश्वामित्र शास्त्री यांच्या वतीने डॉ. रामचंद्र पाटील यांनी आपले मनोगत व्यक्त केले. पूज्य गुरुजींच्या कार्यात सहयोग देणारे तीन शिष्य सर्वश्री गुणवंतराव पाटील, माधवराव चव्हाण व प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी यांचाही

याप्रसंगी सत्कार करण्यात आला. याच कार्यक्रमात श्री सोममुनीजी, योगमुनी जी, मंत्री राजेंद्र दिवे, डॉ. मेहेत्रे, तसेच श्री रघुरामजी गायकवाड, डॉ. मधुसूदन काळे, गुणवंतराव पाटील यांनीही विचार मांडले व शुभेच्छा दिल्या. कार्यक्रमाची सुरुवात परळीच्या श्रद्धानंद गुरुकुलाच्या ब्रह्मचार्यांनी सादर केलेल्या वैदिक मंगल गायनाने झाली, तर श्री संजय गायकवाड शास्त्री यांनी स्वागतगीत सादर केले.

कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक प्रा. डॉ. नयनकुमार आचार्य, सूत्रसंचालन निवृत्त शिक्षणाधिकारी श्री शि.मा.जाधव त्यांनी केले तर आभार अविनाश शास्त्री यांनी मानले. कार्यक्रमाच्या प्रारंभी पंडित राजवीर शास्त्री यांच्यापूर्वी त्याखाली वैद्यकीय यज्ञसंपन्न झाला. यात यजमान म्हणून सौ.व श्री दिलीप मयाचारी सौ.व श्री वीरेंद्र सूर्यवंशी, सौ.व श्री आकाश पाटील हे सहभागी झाले होते.

भव्य मिरवणूक– दरम्यान औराद गावातून तपस्वी भूमिपुत्रांची भव्य अशी मिरवणूक काढण्यात आली. सजवलेल्या उघड्या कार रथात सर्वात पुढे तपस्वी संन्यासी पूज्य श्रध्दानंदजी बसले होते, तर मागे पू. डॉ. ब्रह्ममुनिजी व वैद्य विज्ञानमुनीजी विराजमान झाले होते. गुरुकुलचे ब्रह्मचारी, शाळेचे विद्यार्थी, असंख्य कार्यकर्ते, शिष्यगण आणि गावातील नागरिक या मिरवणुकीत सहभागी झाले. सर्वजण उत्साहात भजने व गीत गात होते तर मोठ्या प्रमाणात जयघोष ही देण्यात येत होते. पंडित प्रतापसिंग चौहान हे तितक्याच जोशपूर्ण आवाजात भजने सादर करीत होते. गावात रस्त्यावर दुतर्फा रांगोळ्या काढण्यात आल्या होत्या. जसजशी शोभायात्रा पुढे जात होती, तसतसे कार्यकर्ते सहभागी होत होते. असंख्य सौभाग्यवती महिला सत्कारमूर्तींचे औक्षण करीत त्यांना दीर्घायुष्य चिंतन होत्या. तर फुलांची उधळण झाली.

कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी सर्वश्री बळीरामजी सूर्यवंशी (प्रधान) राजेंद्र पाटील (मंत्री), विलास कारभारी, अशोक कारभारी, योगेश पाटील, सरपंच सुशील जाधव, मोहन कारभारी, वीरेंद्र सूर्यवंशी, सतीश मयाचारी, रमेश कारभारी, गुणवंतराव पाटील, संजय गायकवाड, इत्यादी बहुमोल सहकार्य केले. कार्यक्रमात हैदराबाद, छ. संभाजीनगर, धाराशिव, लातूर, उमरगा, निलंगा, सोलापूर, अंबाजोगाई, परळी, उदगीर, गुंजोटी, कदेर, माडज इत्यादी ठिकाणाहून अनेक कार्यकर्ते सहभागी झाले होते.

उदगीर येथे सभेतर्फे स्वातंत्र्य सैनिकांचा सत्कार व प्रा.शिंदे यांच्या ग्रंथाचे प्रकाशन

हैदराबाद स्वातंत्र्यसंग्रामाच्या अमृत महोत्सवी वर्षाचे औचित्य साधून अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद व आर्य बलिदानी भाई श्यामलालजी यांच्या बलिदान दिनाच्या निमित्ताने दि.२५ डिसेंबर २०२२ रोजी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा परळी व आर्य समाज उदगीरच्या संयुक्त विद्यमाने चार स्वातंत्र्यसैनिकांचा प्रतिनिधिक सत्कार करण्यात आला. उदगीर येथील आर्य समाजात पार पडलेल्या या कार्यक्रमात श्री आनंदमुनीजी (मन्मथ अप्पा चिल्ले) तसेच नामदेवराव चामले, ज्ञानोबा चामले, प्रभूराव डोईजोडे या चार स्वातंत्र्यसैनिकांचा सत्कार करण्यात आला. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे प्रधान योगमुनीजी हे होते. यावेळी श्री राजेंद्रजी दिवे(मंत्री), श्री डॉ.नयनकुमार आचार्य (संपादक, वैदिक गर्जना), डॉ. वीरेंद्र शास्त्री, धर्ममुनिजी, आचार्य मनुदेवजी (गाजियाबाद), विज्ञानमुनीजी, आर्यमुनिजी माजी शिक्षण अधिकारी नरसिंगजी ढोणे, प्रांतीय आर्य वीर दलाचे अधिष्ठाता व्यंकटेश हालिंगे आदी उपस्थित होते.

याच कार्यक्रमात अहमदपूर येथील महात्मा फुले वरिष्ठ महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.वसंत बिरादार यांचा शैक्षणिक व सामाजिक कार्यानिमित्त सत्कार करण्यात आला.

या समारंभात डॉ. नरेंद्र शिंदे व सौ. मधुमती शिंदे या दोघांनी लिहिलेल्या **'ईशोपनिषद्'** व **'संस्कृत सुभाषितस्तबक:'** या दोन ग्रंथांचे

प्रकाशन करण्यात आले. तसेच देगलूर येथील समर्पित व सेवाभावी कार्यकर्ते श्री गोपाळजी नाईक यांचाही सत्कार करण्यात आला. कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी बाबुरावजी नवटक्के, प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी, सुबोध अंबेसंगे, भाऊराव अहमदाबादे, ओम चव्हाण, अजितकुमार सरसंबे, बलराज कंधारे, सतीश मगदाळे, आपटे, घोणसीकर, सौ.संध्या बेद्रे, सुमनदेवी चव्हाण आदींनी परिश्रम घेतले. या कार्यक्रमात औराद, उमरगा, निलंगा, लातूर ,देगलूर, शिवनखेड, साकोळ, परळी, सोलापूर, बिदर, हैदराबाद इत्यादी ठिकाणाहून अनेक कार्यकर्ते सहभागी झाले होते.

वर्धा येथील साहित्य संमेलनात वैदिक साहित्य स्टॉल

नुकत्याच दि.२, ३, ४ व ५ फेब्रुवारी रोजी वर्धा येथील आयोजित ९६ व्या अ.भा.मराठी साहित्य संमेलनात महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे वैदिक साहित्य ग्रंथ प्रदर्शन व विक्री स्टॉल (गाळा क्र.१००) लावण्यात आला होता.

मराठी सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथांसह विशुद्ध मनुस्मृती (मराठी), संस्कारविधी, ऋग्वेदादिभूमिका, समग्र क्रांतीचे अग्रदूत- महर्षी दयानंद, वेदांचे यथार्थ स्वरुप, पं.गुरुदत्त हे व इतर छोटे-मोठे ग्रंथ या स्टॉलवर ठेवण्यात आले होते. या स्टॉलवर बसून ग्राहकांना ग्रंथाविषयी व आर्य समाजा संदर्भात माहिती देणारे कोल्हापुरचे उत्साही आर्ययुवक श्री महेश आर्य(पाटील)यांनी मोलाची भूमिका बजावली. या स्टॉलला अनेक मान्यवरांनी भेटी दिल्या. दै.पोलीस टाईम्सचे मुख संपादक श्री विलास पाटील यांनी भेट दिली असता त्यांना श्री पाटील यांनी महर्षी दयानंद चरित्र भेट दिले. त्यासोबतच वैदिक साहित्याची वाचकांना माहिती देण्याबाबत व ग्रंथ पाठविणे, ने-आण करणे, साहित्य मांडणी या कामात सभेचे व्यवस्थापक श्री रंगनाथजी तिवार, ॲड.श्री अनंत साळवे व इतरांनी महत्त्वाची कामगिरी केली. विशेष म्हणजे साहित्य संमेलनात वैदिक साहित्य स्टॉल उभा करण्यास्तव प्रेरणा देणारे अमेरिकेतील वैदिक धर्मप्रचारक श्री रणजितजी आर्य यांनी उल्लेखनीय कार्य केले आहे. यास्तव सर्वांचे सभेचे प्रधान श्री योगमुनिजी व मंत्री श्री राजेंद्र दिवे व इतरांनी अभिनंदन केले आहे.

परळीत नववर्ष व आर्य समाज स्थापना दिन साजरा

जगाच्या पाठीवर भारतीय पर्व व सणांना अध्यात्म, निसर्गपरिवर्तन, वैश्विक कल्याण व मानवी मूल्यांचे अधिष्ठान असल्याने ते सर्वांसाठी स्वीकार्य आहेत. पण अलीकडील काळात रूढी परंपरा व अंधश्रद्धा यांमुळे सण व उत्सवांचे मूलभूत विशुद्ध स्वरूप हरपत चालल्याने समाजात दुःख व अशांतता वाढत चालली आहे, असे प्रतिपादन तपोनिष्ठ साधक स्वामी सोममुनीजी यांनी केले.

नववर्षानिमित्त येथील आर्य समाजात 'चैत्र महात्म्य' या विषयावर आयोजित कार्यक्रमात प्रमुख मार्गदर्शक म्हणून ते बोलत होते. अध्यक्षस्थानी संस्थेचे प्रधान श्री जुगलकिशोर लोहिया हे होते. श्रीमुनिजी यांनी आपल्या व्याख्यानात याच दिवशी महर्षी दयानंदांनी मुंबई येथे आर्य समाजाची स्थापना करून जगावर मोठे उपकार केले आहेत. या संस्थेचा क्रांतीकारी इतिहास वर्तमान युगाला प्रेरणादायी ठरो, असे विचार मांडले. अध्यक्षीय समारोपात श्री लोहिया यांनी गुढीपाडवा व आर्य समाजाचे महत्त्व विशद केले. यावेळी काशिनाथ व राचय्या आर्य, सौ. श्रेयसी शास्त्री, सोनाली तिवार यांनी भजन व गीत सादर केले. सुरुवातीला प्रा. नयनकुमार आचार्य यांच्या पौरोहित्या खाली नवसंवत्सरेष्टी यज्ञ संपन्न झाला. यात सर्वश्री उदय तिवार, सत्यप्रकाश हुलगुंडे व निखिल शास्त्री हे सपत्नीक यजमान सहभागी झाले. नंतर आर्य समाज स्थापना दिनानिमित्त ओम ध्वजारोहण प्रधान श्री जुगल किशोर लोहिया व सोममुनीजी यांच्या हस्ते करण्यात आले. नंतर महर्षी दयानंद व्यायामशाळेच्या अत्याधुनिक व्यायाम साहित्याचे उद्घाटन श्री देविदासराव कावरे, डॉ. मधुसूदन काळे, जयपाल लाहोटी व डॉ. विश्वास भायेकर यांच्या हस्ते झाले.

लातूरच्या गांधी चौक आर्य समाजाचा वार्षिकोत्सव

लातूर येथील आर्य समाज गांधी चौक या ऐतिहासिक संस्थेचा ८५वा वार्षिकोत्सव दि.१३, १४ व १५ मार्च रोजी विविध कार्यक्रमांनी साजरा करण्यात आला. व्याख्याते म्हणून आमंत्रित असलेले दिल्ली येथील वैदिक विद्वान पं.श्री यशवीरजी आर्य यांनी वेद, उपनिषद व अन्य वैदिक साहित्यांच्या आधारे राष्ट्रीय, सामाजिक व कौटुंबिक या विषयांवर विचार मांडले. तर सोलापूर येथून आमंत्रित मराठी विचारवंत श्री पं.राजवीरजी शास्त्री यांनी सद्यस्थितीत वैदिक विचारांची गरज, आर्य समाजाची शिकवण व इतर विषयांवर मौलिक स्वरुपात प्रबोधन केले. त्याचबरोबर भजनोपदेशक म्हणून मीरत(उ.प्र.) येथून आलेले गायक श्री पं.अजय आर्य यांनी संगीतमय भक्तिगीतांनी श्रोत्यांची मने जिंकली. दररोज सकाळी पं.चंदेश्वर शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली यज्ञ संपन्न होई. सकाळबरोबरच संध्याकाळी देखील कार्यक्रमांना जोरदार प्रतिसाद मिळत असे. हा वार्षिकोत्सव सफल करण्यासाठी आर्य समाजाचे प्रधान श्री ओमप्रकाशजी पाराशर, मंत्री शरदचंद्रजी डुमणे, कोषाध्यक्ष श्री अविनाश परांडेकर, उपप्रधान श्री भारत माळवदकर व कार्यकर्त्यांनी प्रयत्न केले.

उदगीर येथे मगदाळे गुरुजींचा सत्कार

आर्य समाजाचे जुन्या पिढीतील वयोवृद्ध कार्यकर्ते, संस्कृतचे निवृत्त प्राध्यापक, श्रद्धानंद गुरुकुलातील माजी उपाचार्य श्री धर्ममुनिजी उर्फ नागनाथराव मगदाळे यांनी केलेल्या प्रेरणादायी कार्याबद्दल त्यांचा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा व आर्य समाज उदगीरच्या वतीने भावपूर्ण सत्कार करण्यात आला. अध्यक्षस्थानी सभेचे

उपमंत्री प्रा.श्री अर्जुनराव सोमवंशी हे होते. तर यावेळी आर्य समाजाचे प्रधान श्री बाबुराव नवटक्के, मंत्री प्रा.डॉ.नरेंद्र शिंदे, आनंद हुरदळे, माधव मैलारे, पं.प्रतापसिंह चौहान, सौ.मीना हुरदळे, सौ.मधुमती शिंदे आदी उपस्थित होते. मान्यवरांच्या हस्ते श्री मुनिजींचा शाल, श्रीफळ व सन्मानचिन्ह देऊन सपत्नीक सत्कार करण्यात आला.

शोक वार्ता

पं. विलास वायचळ यांना पत्नीशोक

धाराशिव येथील आर्य समाजाचे क्रियाशील कार्यकर्ते व वैदिक साहित्याचे अभ्यासक, पुरोहित पं. श्री विलास वायचळ (आर्य) यांच्या धर्मपत्नी सौ. कांचनमाला वायचळ यांचे दि.३ एप्रिल रोजी हृदयविकाराने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ७५ वर्षे वयाच्या होत्या. गेल्या कांही महिन्यांपासून त्या आजारी असल्याने संभाजीनगर येथे त्यांच्यावर उपचार सुरू होते. त्यातच त्यांची प्राणज्योत मालवली. त्यांच्या मागे पती, पुत्र, कन्या ,जावई व नातवंडे असा परिवार आहे. स्थानिक व्यंकटेश महाविद्यालयातील हिंदी विभागात अध्यापनरत प्रा. डॉ. श्री विनोद वेदार्य यांच्या त्या मातु:श्री होत. अगदी लहानपणापासूनच त्यांच्या अंगी जिद्द व चिकाटी आणि प्रखर धैर्यशीलता हे गुण होते. म्हणूनच प्रारंभिक शिक्षण जेमतेम असतांनाही विवाहानंतर आपल्या पतींच्या मार्गदर्शनाखाली पदवी ,डी.एड. पर्यंतचे शिक्षण घेतले. कुटुंबाच्या जबाबदारीमुळे पुढे अध्यापनसेवेत न पडता आपल्या मुलां-मुलींना सुशिक्षित व सुसंस्कारित करण्याच्या कामी मोठे योगदान दिले.वैदिक विचारांच्या त्या पुरस्कर्त्या होत्या. त्यांच्या पार्थिवावर श्री विजयकुमार बंग यांनी वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार केले.

बिभीषण जगदाळे यांचे निधन

धाराशिव येथील आर्य समाजाचे सदस्य श्री बिभीषण भीमराव जगदाळे यांचे दि.२८ मार्च २०२३ रोजी दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ६८ वर्षांचे होते. जुन्या पिढीतील कर्मठ आर्य समाजी, स्वातंत्र्य लढ्यात सहभागी व सामाजिक कार्यकर्ते श्री मामा जगदाळे यांचे श्री बिभीषण हे नातू होते. आर्य समाजाच्या सत्संग व कार्यक्रमात ते सहभागी होत असत. त्यांच्या पार्थिवावर आर्य समाजाचे मंत्री श्री विजय बंग यांनी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार केले.

वरील दोन्ही दिवंगतांना महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली! शोकाकुल परिवाराच्या दुःखात आर्यजन सहभागी आहेत.

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/108/RNP/Beed/2021-2023

सेवा में,
श्री. ______________________

____

____

____

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि ! || ओ३म् || जीवेत् शरदः शतम्!

औराद शहाजानी(जि.लातूर) स्थित आर्य समाज के आधारस्तम्भ,
शारदोपासक शिक्षण संस्था के नवनिर्माण में योगदान देनेवाले,
सामाजिक, शैक्षिक कार्यकर्त्ता एवं कर्तव्यदक्ष अध्यापक
पू.पिताजी स्व.श्री.गणपतरावजी विठोबा निरमनाळे गुरुजी
की पावन स्मृति में तथा आदर्श शिक्षिका एवं सामाजिक कार्यकर्त्री
पू.माताजी श्रीमती सीताताई गणपतरावजी निरमनाळे
के गौरव में समस्त निरमनाळे(जाधव) परिवार की ओर से
'वैदिक गर्जना मासिक' का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट